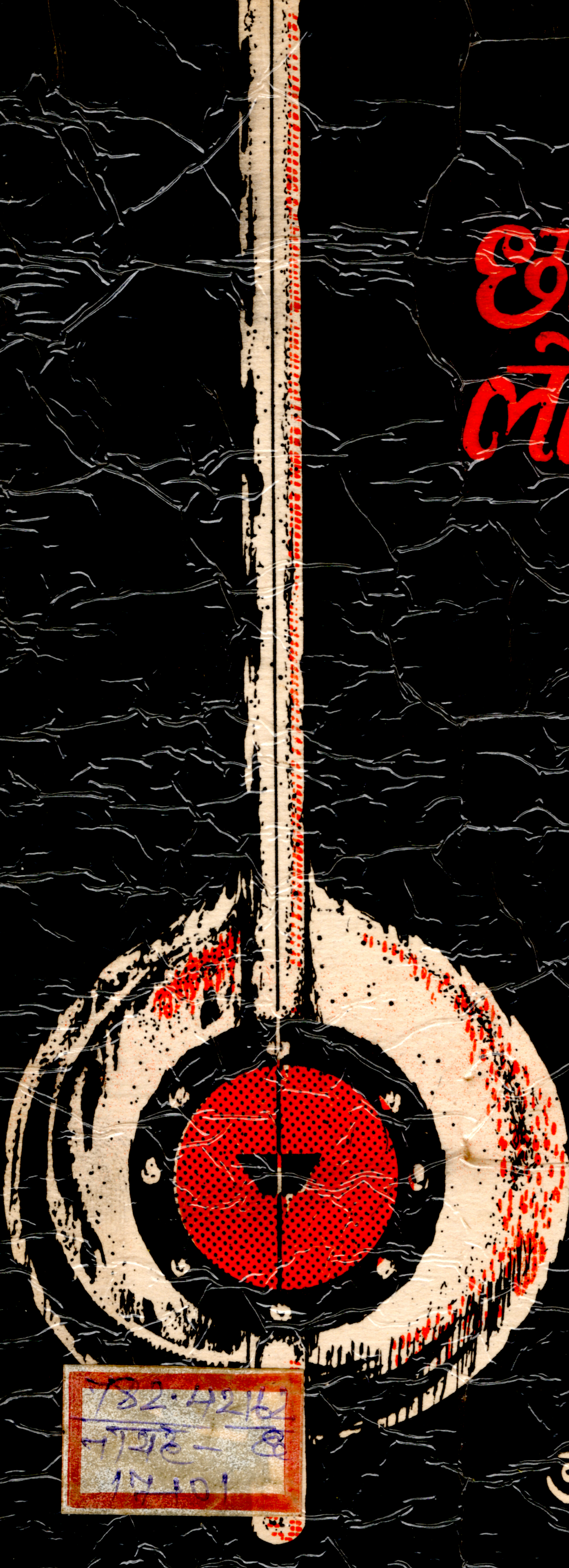
छत्तीसगढ़ी लोक-गीत



डा. हनुमंत नायडू

छत्तीसगढ़ी लोक-गीत

डा. हनुमंत नायडू

प्रकाशक

विश्वभारती प्रकाशन
धनवटे चेम्बर्स,
सीताबर्डी,
नागपुर – 440012.

संस्करण : १९९३

मूल्य : १५-००

प्रकाशक : आर. बी. सिंह
विश्वभारती प्रकाशन,
धनवटे चेम्बर्स, सीताबर्डी, नागपुर-४४००१२.

मुद्रक : आर. एम. नंदनवार
राधाकृष्ण प्रिंटिंग प्रेस,
साईनगर १, प्रेमनगर, नागपुर-४४०००२.

प्राक्कथन

छत्तीसगढ़ी लोक-गीतों के स्वतंत्र संग्रहों में, सन् १९४० में श्री श्यामाचरण दुबे द्वारा प्रकाशित 'छत्तीसगढ़ी लोक-गीतों का परिचय' तथा सन् १९६२ में श्री दानेश्वर शर्मा द्वारा प्रकाशित 'छत्तीसगढ़ के लोक-गीत' महत्वपूर्ण संग्रह हैं परन्तु फिर भी बहुत दिनों से छत्तीसगढ़ी लोक-गीतों का एक अच्छा संग्रह प्रकाशित करने की इच्छा मन में थी। समय बात को टालता गया। व्यस्तता इसे और भी टालती यदि विश्वभारती प्रकाशन के श्री. आर. एस. खन्ना व श्री. आर. आर. यादव इस संग्रह के प्रकाशन के लिए मुझ पर जोर नहीं डालते। एक स्वतंत्र संग्रह के रूप में छत्तीसगढ़ी के इतने लोक-गीत प्रथम बार प्रकाशित हो रहे हैं। आशा है कि छत्तीसगढ़ी लोक-गीतों में रुचि रखने वालों के साथ ही छत्तीसगढ़ी लोक-गीतों के क्षेत्र में शोधकार्य करने वालों के लिए भी इस संग्रह के गीत उपयोगी सिद्ध होंगे। इस संग्रह के पीछे अनेकानेक लोगों की सहायता व सहयोग है। मैं उन सब लोगों के प्रति आभार व्यक्त करता हूं। मुख पृष्ठ के लिए मैं अपने चित्रकार मित्र श्री अरुण मोरघड़े का अत्यन्त आभारी हूं।

हनुमंत नायडू
अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
कला व समाज विज्ञान संस्था
(नागपुर महाविद्यालय)
नागपुर

तकिया पारा
दुर्ग (म. प्र.)

अनुक्रमणिका

प्रथम छत्तीसगढ़ी फिल्म

'कहि देबे संदेस'

के

निर्माता, निर्देशक

भाई मनुनायक

और

उर्वशी भाभी

को

सादर

छत्तीसगढ़ी लोक-गीतों का वर्गीकरण

मध्यप्रदेश का पूर्वी अंचल छत्तीसगढ़ कहलाता है। इसमें रायगढ़, बिलासपुर, सरगुजा, रायपुर, दुर्ग, राजनांदगांव और बस्तर जिले आते हैं। छत्तीसगढ़ी इस प्रदेश की बोली है। छत्तीसगढ़ी, लिखित साहित्य की अपेक्षा अलिखित अथवा मौखिक साहित्य के रूप में अधिक समृद्ध है। छत्तीसगढ़ी के पास अलिखित साहित्य का अपार भंडार है, जिसका एक बड़ा हिस्सा लोक-गीतों के रूप में है। इन लोक-गीतों में मानव हृदय की उबलती हुई भावनाएं झरनों की तरह फूटकर बह निकली हैं।

छत्तीसगढ़ी लोक-गीतों को निम्नलिखित मुख्य सात भागों में विभाजित किया जा सकता है:–

१. संस्कारों के गीत:–

क. सोहर के गीत ख. बिहाव के गीत ग. पठौनी के गीत

२. ऋतुओं से संबंधित गीत:–

क. फाग ख. बारामासी ग. सवनाही

३. उत्सवों के गीत:–

क. छेरछेरा गीत ख. राउत नाच के दोहे ग. सुआ गीत

४. धर्म व पूजा के गीत:–

क. गौरा गीत
ख. माता सेवा के गीत
ग. जंवारा गीत
घ. भोजली गीत
ङ. धनकुल के गीत
च. नागपंचमी के गीत

५. लोरियां व बच्चों के खेलों के गीत:–

अ. लोरियां

आ. बच्चों के खेलों के गीत :–

क. बइठे फुगड़ी
ख. खड़े फुगड़ी
ग. कांऊ-मांऊ अथवा मांऊ-मांऊ
घ. डांडी–पौहा
ङ. खुडुवा (कबड्डी)
च. भौंरा
छ. बच्चों को बहलाने के गीत
ज. बच्चों के अन्य स्फुट गीत

६. **मनोरंजन के गीतः–**

१. नृत्य गीत
- क. करमा
- ख. डंडा गीत
- ग. नाच गीत अथवा नचौरी

२. अन्य गीत :–
- क. ददरिया
- ख. बांस गीत
- ग. देवार गीत

७. **अन्य स्फुट गीतः–**

- क. भजन
- ग. पंथी गीत
- ख. सतनामियों एवं कबीर पंथियों के रहस्यवादी पद

संस्कारों के गीत

भारतीय जीवन में संस्कारों का बहुत महत्व है। इन संस्कारों के अवसर पर सुख और दुख की अभिव्यक्ति के रूप में अनेक लोक-गीत विभिन्न प्रदेशों में प्राप्त होते हैं परन्तु छत्तीसगढ़ में केवल कुछ ही संस्कारों के गीत प्राप्त होते हैं, उनमें सोहर (जन्मोत्सव), बिहाव (विवाह) तथा पठौनी (गौना) के गीत प्रमुख हैं। यद्यपि अन्तेष्टि के अवसर पर यहां कोई विशेष गीत नहीं गाये जाते परन्तु भजनों आदि में अन्तेष्टि का उल्लेख है।

सोहरः–

शिशु का जन्म पुरुष के पौरुष और नारी के नारीत्व को तो सार्थक करता ही है, साथ ही परिवार एवं परिवार के बाहर बिखरे हुए संबंधों के समस्त वातावरण को एक अपूर्व आनंद से प्लावित कर देता है। आनंद के इस अवसर पर छत्तीसगढ़ में जो गीत गाये जाते हैं, उन्हें सोहर अथवा सोहर-मंगल कहा जाता है। कुछ विद्वान सोहर की निरुक्ति 'सुघर' मानते हैं, जिसका अर्थ सुन्दर है।[1] कुछ अन्य विद्वानों के मतानुसार सोहर का संबंध सौरगृह से है।[2] एक अन्य मत के अनुसार सोहर संस्कृत 'सूतिका' का ही अपभ्रंश रूप है।[3] सोहर का संबंध 'सोहना' जिसका अर्थ 'मोहक' है से भी संभव है। आनंद के ऐसे अवसर पर गाये जानेवाले ये गीत हर व्यक्ति को 'सोहने' के कारण ही 'सोहर' कहलाने लगे होंगे।

बरही के दिन (जन्म के १२ वें दिन) नारियां सोहर गाती हैं। कुछ लोग

---

1. हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास : षोडश भाग : खण्ड १, अध्याय ३, पृ. १०७
2. ————वही———— खण्ड २, अध्याय २, पृ. २०८
3. मैथिली लोक-गीतों का अध्ययन : डा. तेजनारायण लाल, पृ. १०१

सवा महीने में भी सोहर गाने का आयोजन करते हैं। न तो सोहर गाने वालियों की संख्या निश्चित रहती है और न निश्चित समय का कोई बंधन ही इसमें होता है। सधवा अथवा विधवा कोई भी सोहर गा सकती है। ढोलक और मंजीरा इस अवसर के प्रमुख वाद्य है। परन्तु कुछ लोगों के उत्साह के कारण लोटा और थाली भी वाद्य का रूप ग्रहण कर लेते हैं। सोहर नारियों का गीत है अतः इनमें नारी सुलभ कोमल भावनाओं की ही अभिव्यक्ति प्राप्त होती है। सोहर गीतों के दो भेद किए जा सकते है:- १. प्रबंध तथा २. मुक्तक।

प्रथम प्रकार के सोहर गीतों में कोई कथा अथवा कथा-प्रसंग होता है जबकि द्वितीय में किसी भावना विशेष की अभिव्यक्ति होती है। कथात्मक सोहर-गीतों में कृष्ण जन्म संबंधी कथा प्रमुख है। एक सोहर में आठवीं सन्तान को बचाने की चिन्ता से दुखी देवकी और उसको सहायता का आश्वासन देने वाली यशोदा के वार्तालाप का प्रसंग चित्रित है।[4] गर्भवती के लक्षण, पुत्र प्राप्ति के लिए किये गये यत्न, पुत्र प्राप्ति के पश्चात संबंधियों की प्रसन्नता, बहू के प्रति ससुराल वालों की उपेक्षा, ननद-भाभी का वार्तालाप व नेग आदि अन्य सोहर-गीतों के विषय हैं। यद्यपि आनंद के अवसर के गीत होने पर भी सोहर में करुण रस प्रमुख है। सोहर की तुलना सद्यविकसित उस पुष्प से की जा सकती है, जिसका खिलना मुस्कान-सा प्रतीत होता है तथा उस पर पड़ी हुई ओस की बूंदें आंसुओं का भ्रम उत्पन्न करती हैं परन्तु इन आंसुओं और मुस्कानों के बीच भी पुष्प जिस प्रकार सुन्दर होता है ठीक उसी भांति सोहर भी अपनी समग्रता में मोहक होता है।

विवाह

निम्नलिखित प्रमुख वैवाहिक आचार हैं जिन अवसरों पर यहां गीत गाये जाते हैं।

चुलमाटी:-

विवाह के समय विशेष रूप से बनाये जाने वाले चूल्हे के लिए मिट्टी लाने के अवसर पर नारियों द्वारा गाये जाने वालें गीत चुलमाटी के गीत कहलाते हैं। व्यंग चुलमाटी के गीतों का प्रमुख स्वर है।

तेलचघी:-

तेलचघी का अर्थ है तेल चढ़ना। विवाह के समय पर वर-वधू पर तेल चढ़ाये जाने के अवसर पर नारियों द्वारा गाये जाने वाले गीत तेलचघी के गीत कहलाते हैं। इन गीतों में मुख्य रूप से इस अवसर पर विभिन्न संबंधियों द्वारा सम्पन्न की जाने वाली क्रियाओं तथा उपयोग में आने वाली वस्तुओं के

4. देखिए गीत १

उत्पन्न होने तथा प्राप्त होने के स्थानों का वर्णन प्राप्त होता है। इन गीतों में राम-लक्ष्मण को तेल चढ़ाये जाने का उल्लेख भी है।[5] इसका कारण यही है कि राम एवं सीता प्राचीनकाल से ही भारतीय वर-वधू के आदर्श रहे हैं।

मायमौरी:–

विवाह के समय देवताओं तथा पितरों की पूजा के अवसर पर नारियों द्वारा गाये जाने वाले गीत मायमौरी के गीत कहलाते हैं। इनमें पूर्वजों एवं देवताओं का आवाहन होता है।

नहडोरी:–

बारात–प्रस्थान के पूर्व वर को स्नान (नहलाने) के पश्चात कंकण(डोरी) बांधने के समय नारियों द्वारा गाये जाने वाले गीत नहडोरी के गीत कहलाते हैं। एक गीत माता एवं पुत्र के वार्तालाप के रूप में है जिसमें विवाह के लिए रुपयों की याचना करता है।[6]

परघनी:–

वधू के गांव में बारात की 'परघनी' (अंगीकार करना) के समय वधू के घर में नारियों द्वारा जो गीत गाये जाते हैं, उन्हें परघनी के गीत कहते हैं। इन गीतों में बारात का वर्णन प्राप्त होता है। एक गीत में शिव की बारात का वर्णन है।[7]

भड़ौनी तथा गारी:–

वर को वधू-पक्ष से खिलाने के लिए विभिन्न व्यंजन लेकर जाने के समय नारियों द्वारा गाये जाने वाले गीत 'भड़ौनी' तथा बाद में बारात के भोजन के अवसर पर वधू–पक्ष की नारियों द्वारा गाये जानेवाले गीत 'गारी' (गाली) कहलाते हैं। इन गीतों में वर–पक्ष के लोगों के लिए गालियां ही होती हैं[8] परन्तु कोई बुरा नहीं मानता। वे भोजन के साथ ही गालियों का भी स्वाद लेते चलते हैं।

भांवर:–

भांवर का अर्थ होता है 'परिक्रमा'। जब वर–वधू अग्नि की परिक्रमा करते हैं, उस अवसर पर नारियों द्वारा गाये जाने वाले गीत भांवर के गीत कहलाते हैं। इन गीतों में राम तथा सीता के विवाह का चित्रण प्राप्त होता है।[9]

---

5. देखिए गीत ८
6. ,, गीत १२
7. ,, गीत १३
8. ,, गीत १४, १५, १६, १७
9. ,, गीत १८

दहेज:—

विवाह के अवसर पर वर-वधू को जो वस्तुएं भेंट दी जाती हैं उन्हें दहेज या टिकावन कहा जाता है। इस अवसर पर नारियों द्वारा गाये जाने वाले गीत दहेज के गीत कहलाते हैं। इन गीतों में वधू के विभिन्न संबंधियों द्वारा विभिन्न वस्तुएं दहेज में देने का वर्णन है।[10]

बिदा :—

विवाह के पश्चात वधू की बिदाई के अवसर पर नारियों द्वारा जो गीत गाये जाते हैं, वे बिदा के गीत कहलाते हैं। ये गीत आंसुओं से भीगे और विरह की कसक से पूर्ण होते हैं। इन गीतों में वधू के माता, पिता, भाई, सखियां तथा अन्य संबंधियों के विलाप के साथ ही परदेस जाने वाली वधू के हृदय के मार्मिक चित्र भी प्राप्त होते हैं।[11]

पठौनी अथवा गौना:—

बाल-विवाहों के पश्चात जब वधू वयस्क हो जाती है और प्रथम बार पतिगृह को जाती है, उस अवसर पर नारियों द्वारा गाये जाने वाले गीत पठौनी अथवा गौना के गीत कहलाते हैं। बिदाई तथा पठौनी के गीतों में कोई अंतर नहीं है। दोनों में ही बेटी की बिदाई के हृदयस्पर्शी चित्र प्राप्त होते हैं।[12]

ऋतुओं से संबंधित गीत

ऋतुएं सदैव से इस धरती को सजाती, संवारती रही हैं। हर ऋतु धरती का एक नये ढंग से श्रृंगार करती रही और धरती के इस नित नूतन सौन्दर्य ने मनुष्य को एक-रसता की उबा देने वाली पीड़ा से मुक्ति दी है। संभवतः इसीलिए मानव हर ऋतु के स्वागत के लिए उत्सुक रहता है, चाहे कुछ ऋतुएं उसे अधिक भाती हों और कुछ कम। छत्तीसगढ़ में ऋतु संबंधी निम्नलिखित गीत प्राप्त होते हैं:—

फाग:—

'फाग' छत्तीसगढ़ के वसंत-गीत हैं। मुख्य रूप से 'फाल्गुन' माह में होली के अवसर पर गाए जाने के कारण ही इन्हें 'फाग' कहा जाता है। जब पलास की कली-कली लाज से रंग उठती है, अमराई जब अपने ही उमड़ते यौवन की सुगंध से बौरा उठती है, जब वसंत का यौवन रंग-बिरंगे पुष्पों के रूप में फूटकर अपने उभार पर आ जाता है तब छत्तीसगढ़ का वायुमंडल इन वसंत-गीतों से गूंज उठता है। होली के अवसर पर छत्तीसगढ़ में स्थान-स्थान

---

10. देखिए गीत १९
11. „ गीत २०, २१
12. „ गीत २२

पर उड़ते हुए गुलाल के बादलों की छाया में रंग मे शराबोर पुते हुए चेहरे, ढोलक, नगाड़े और मंजीरे की ध्वनि के बीच से उठता हुआ एक स्वर :-

'होरो खेलें बिरिज में नंदलाला हो।'

किसी भी अजनबी को बरबस अपनी ओर खींच लेता है। इन गीतों में एक ऐसी मस्ती है, ऐसा उल्लास है जो गायकों के हृदय में न समाकर फूट पड़ता है, - प्रकृति के बीच फूट पड़ने वाले पल्लवों की तरह, फूलों की तरह, कलियों की तरह। फाग गीतों का गायन यहां माघ माह की शुक्ल पंचमी (बसंत-पंचमी) से ही प्रारंभ हो जाता है जो कि चैत्र माह तक चलता है। 'फाग' पुरुषों का गीत है। गाने वालों की 'मंडली' होती है परंतु इसमें कोई भी आ सकता है। किसी निश्चित स्थान पर यह मंडली जमती है। रंग-गुलाल एक दूसरे पर डाला जाता है। ढोलक, नगाड़ा, दमउ या टिमकी (तबले से मिलता-जुलता छोटा-सा वाद्य), झांझ तथा मंजीरा आदि फाग के प्रमुख वाद्य हैं। इस गीत की टेक में 'हां', 'अरे हां', 'हो', 'ये हो' आदि रहते हैं। फाग गीतों में मुख्य रूप से कृष्ण-राधा तथा राम-सीता की होली का वर्णन तथा उनसे संबंधित अन्य कथाओं का समावेश होता है।[13] फाग श्रृंगार का गीत है। यद्यपि इसका मूल स्वर आनंद और उत्साह का है परन्तु इसमें विरह के करुण स्वर भी स्पष्ट सुनाई पड़ते हैं। विरहणी के मार्मिक चित्र इन गीतों में प्राप्त होते हैं।

बारामासी:-

इन गीतों में वर्ष के बारह महिनों का वर्णन तथा चित्रण होता है अत: इन्हें बारामासी कहा जाता है और केवल इसीलिए इन्हें ऋतु संबंधी गीतों में लिया जा सकता है अन्यथा न तो किसी विशेष ऋतु में इनके गाने की प्रथा है और न बारामासी के कोई विशेष गीत ही हैं। 'माता-सेवा' तथा 'जंवारा' आदि शक्तिपूजा के गीतों में विभिन्न माताओं के प्राकृतिक सौन्दर्य की छवि वर्ष के १२ महिनों में भिन्न भिन्न माह के अनुसार प्रस्तुत की गयी है। एक बारामासी गीत में तो वर्ष के विभिन्न महिनों में खाये जानेवाले विशेष फलों एवं व्यंजनों का वर्णन है।[14] अतः बारामासी गीतों की विषय वस्तु कुछ भी हो सकती है।

सवनाही:-

सावन माह अथवा वर्षा-ऋतु में गाये जानेवाले ये गीत 'सवनाही' कहलाते हैं परंतु इनका व्यापक प्रचार नहीं है। प्राप्त कुछ गीतों में नारी

---

13. देखिए गीत २३, २४, २५

14. ,, गीत ३०

हृदय की भावनाओं का सुन्दर चित्रण है।[15] परन्तु एक भिन्न नाम के अतिरिक्त इनकी कोई अपनी विशेषता नहीं है जो इन्हें अन्य गीतों से भिन्न दर्शा सके।

उत्सवों के गीत

मानव सदैव से उत्सव प्रिय रहा है। भारत में अनेकानेक उत्सव मनाये जाते हैं। इन उत्सवों के मूल में भारत की प्राचीन समृद्धि ही रही है। आज ये उत्सव उस समृद्धि की स्मृति मात्र होकर रह गये हैं परंतु आज की अभाव-जन्य स्थिति में भी ये उत्सव भारतीय जनता में नवीन उत्साह का संचार करके उन्हें जीने की शक्ति प्रदान करते हैं। छत्तीसगढ़ के कुछ प्रमुख उत्सव गीत निम्नलिखित हैं:-

छेर छेरा गीत:-

यह बच्चों का गीत है। अगहन पूर्णिमा को यहाँ 'छेर छेरा' पुन्नी (पूर्णिमा) कहते हैं। अगहन पूर्णिमा का समय गांवों में फसल की 'कटाई' तथा 'मिंजाई' का समय होता है। इस दिन बच्चों की टोलियां जिनमें बालक-बालिकाएं सम्मिलित होती हैं, घर-घर जाकर समवेत स्वरों में 'छेर छेरा गीत' गाती हैं तथा अनाज मांगकर संग्रह करती हैं। अंत में यह अनाज आपस में बांट लिया जाता है। प्रतीत होता है कि यह उत्सव किसी प्राचीन बड़े उत्सव का अवशेष है। संभवतः प्राचीन काल में फसल के लिये किये गये वर्षा ऋतु के कठिन श्रम के पश्चात नयी फसल के स्वागत में यह उत्सव मनाया जाता रहा होगा। उस दिन हर गृह से अनाज का संग्रह करके संभवत चांदनी रात में सामूहिक भोज एवं नृत्य-गीत आदि के रूप में इस उत्सव का आयोजन किया जाता रहा होगा जिसका अवशेष अब केवल बच्चों में शेष रह गया है। इस गीत में गृहस्वामिनी से शीघ्र अनाज देकर विदा करने की प्रार्थना पायी जाती है।[16]

राउत नाच के दोहे:-

'राउत' छत्तीसगढ़ की एक प्रमुख जाति है। राउत स्वयं को यदुवंशी तथा कृष्णानुयायी मानते हैं। इन्हें 'गहिरा' भी कहा जाता है। गोपालन इनका प्रमुख व्यवसाय है। 'राजपूत' का अपभ्रंश ही 'राउत' हुआ ऐसा कुछ लोगों का अनुमान है।[17] वैसे 'राजपूत' या 'रसपूत' नामक एक भिन्न जाति भी छत्तीसगढ़ में विद्यमान है। एक मत के अनुसार इन्हें आभीर वंशज माना गया है तथा आभीर से 'अहिरा' तथा 'गहिरा' शब्द के बनने का अनुमान किया गया है। कुछ विद्वान इसे विदेश से आई जाति मानते हैं जबकि अन्य इन्हें शुद्ध भारतीय

---

15. देखिए गीत ३१

16. „ गीत ३२

17. हिन्दी अनुशीलन : धीरेन्द्र वर्मा विशेषांक : पृष्ठ : २०४

मानते हैं। छत्तीसगढ़ में लोग राउतों के हाथ का पानी ग्रहण करते हैं। राउतों के इस सम्मान के संबंध में डा. बलदेवप्रसाद मिश्र का मत है, – 'यह जाति कदाचित् इसीलिए इतनी समादृत हुई, क्योंकि किसी समय सचमुच ही वह बहादुरी के साथ इस अंचल में राज्य कर रही होगी'।[18] दीपावली के अवसर पर होने वाली मंडई के अवसर पर इनका नाच विशेष रूप से होता है। मंडई के अतिरिक्त भी राउत अपने यजमानों (जिनकी गायें वे चराते हैं) के घर नाचने जाते हैं। बीच में एकाएक कोई एक 'हो'—की आवाज के साथ अपनी लाठी ऊपर कर देता है। नाच कुछ क्षणों के लिए रुक जाता है। वह व्यक्ति उस समय 'दोहा' बोलता है। दोहे की समाप्ति के साथ ही फिर नाच प्रारम्भ हो जाता है। दोहों और नाच का यह क्रम चलता रहता है। इन्हें ही 'राउत नाच के दोहे' कहा जाता है। संभवतः दो पंक्तियों के होने के कारण ही इन्हें दोहा कहा जाता है अन्यथा पिंगल–शास्त्र के अनुसार दोहे के कोई लक्षण इनमें प्राप्त नहीं होते। कई दोहों में तो दोनों पंक्तियों में मात्राओं की संख्या भी न्यूनाधिक होती है। इन दोहों का विषय कोई एक नहीं होता। इनमें देवताओं का स्मरण, अपने व्यवसाय के प्रति गर्व की भावना तो पायी जाती है परंतु इन दोहों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंश वह है जो नीति एवं ज्ञान के तत्वों से पूर्ण है।[19] जीवन के गम्भीर एवं अनुभूत सत्य को इन छोटे-छोटे दोहों में चमत्कारिक ढंग से भर दिया गया है जो सीधे श्रोता के हृदय पर प्रभाव डालता है। राउत नाच के अवसर पर दमउ, दफड़ा, ढोल, निसान, मोहराली, राउतों की विशेष प्रकार की बांसुरी तथा घुंगरू आदि वाद्यों का उपयोग किया जाता है।

सुआ गीत :–

यह नारियों और मुख्य रूप से गोंड आदि आदिवासी नारियों का नृत्य-गीत है। 'सुआ' का अर्थ है 'तोता'। शिष्ट–साहित्य एवं लोक–साहित्य दोनों में ही प्राचीनकाल से तोता वियोगी तथा वियोगिनी के संदेशों को एक दूसरे तक पहुंचाने वाले संदेशवाहक के रूप में चित्रित किया गया है। तोता बुद्धिमान पक्षी माना जाता है। मनुष्य की बोली को समझने, ग्रहण करने तथा उसकी नकल कर सकने के गुण के कारण ही संभवतः उसे यह कार्य सौंपा गया है। यह गीत भी नृत्य के साथ ही दीपावली के अवसर पर ही मुख्य रूप से गाया जाता है। नारियां 'सुए' की एक प्रतिमा एक टोकनी जिसमें धान होता है, में रखकर घर घर जाती हैं। टोकनी रख दी जाती है तथा नारियां उसके चारों ओर

---

18. हिन्दी अनुशीलन : धीरेन्द्र वर्मा विशेषांक : पृष्ठ : २०४

19 देखिए गीत ३६, ३७, ३८

मंडलाकार खड़ी हो जाती हैं। कुछ नारियां नीचे झुक जाती हैं तथा क्रमशः एक बार दाहिनी ओर तथा दूसरी बार बायीं ओर ताली बजाती हैं, साथ ही उसी तरह दाहिना तथा बायां पैर भी उठा-उठाकर रखती हैं। यह तोते की चाल की नकल प्रतीत होती है। अन्य नारियां गाना गाती हैं। नृत्य करने वाली नारियां उस गीत की पुनरावृत्ति करती हैं, तत्पश्चात नृत्य करने वाली नारियां गाने लगती हैं, जबकि गाने वाली नारियां नृत्य करने तथा गीत की पुनरावृत्ति करने लगती हैं। तालियां बजा कर गाये जाने वाले इस नृत्य के साथ किसी विशेष वाद्य की आवश्यकता नहीं होती। सुआ गीत में नारी के हृदय की विभिन्न सूक्ष्म भावनाओं का सुन्दर चित्रण प्राप्त होता है। कुछ सुआ गीतों में विभिन्न फूलों, सब्जियों तथा प्राणियों आदि[20] की जानकारी प्रश्नोत्तर के रूप में प्राप्त होती है।

धर्म व पूजा के गीत

रक्त संबंध के पश्चात धर्म ही एक ऐसा शक्तिशाली बंधन है जो मानव समुदाय को संगठित रखता है। भारत धर्मप्राण देश है। यहां हर आचार पर धर्म की छाप है तथा हर कार्य को धर्म की दृष्टि से देखा जाता है। छत्तीसगढ़ इसका अपवाद नहीं है। यहां अनेक धार्मिक पर्व उत्साहपूर्वक मनाए जाते हैं। यद्यपि यह क्षेत्र अनेक जातियों, धर्मों एवं संस्कृतियों का संगम स्थल रहा है परन्तु मुस्लिम प्रभाव से सदैव बाहर रहने के कारण यहां विशुद्ध आर्य संस्कृति का प्रभाव अधिक स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। यहां जहां आर्यों के सभी देवता पूज्य हैं, वहां द्राविड़ वंशज गोंडों तथा अन्य अनार्य जातियों के अनेक देवताओं की पूजा भी की जाती है। जहां श्रीपुर के अवशेष यह सिद्ध करते हैं कि यहां एक युग में बौद्ध धर्म का प्रभाव था वहां आरंग के समीपवर्ती प्राचीन जैन मंदिर यहां जैन धर्म का प्रभाव भी सिद्ध करते हैं। इन सब का प्रभाव छत्तीसगढ़ की संस्कृति पर किसी न किसी रूप में अवश्य हुआ है परन्तु फिर भी छत्तीसगढ़ की संस्कृति का मूल स्वर आर्य संस्कृति का है। छत्तीसगढ़ में निम्नलिखित धार्मिक पर्वों के अवसरों पर अवसर विशेष के गीत गाए जाते हैं:-

गौरा गीतः-

दीपावली के अवसर पर किये जाने वाले गौरा अथवा गौरी या पार्वती और महादेव के पूजन के अवसर पर नारियों द्वारा गौरा गीत गाये जाते हैं। इन गीतों में देवी-देवताओं का आवाहन, बढ़ई से गौरा एवं ईसर (ईश्वर-महादेव) बना देने की प्रार्थना, महादेव की बारात आदि का वर्णन होता है।[21]

20. देखिए गीत ४५, ४६, ४७
21. ,, गीत ४८, ४९, ५०, ५१, ५२

इस अवसर पर मोहरी, सींग बाजा या कुदुन, दफड़ा, टिमकी, झांझ, मंजीरा, ढोलक, मांदर आदि वाद्यों का उपयोग किया जाता है।

माता सेवा के गीत:-

छत्तीसगढ़ में शीतला या चेचक को माता कहा जाता है। यहां उसे रोग न मानकर माता का प्रकोप माना जाता है तथा माता को शांत करने के लिए पूजा तथा सेवा की जाती है। इस अवसर पर जो गीत गाए जाते हैं उन्हें 'माता सेवा के गीत' कहते हैं। शरीर पर निकलने वाले शीतला के दाने विभिन्न आकार एवं रंग के होते हैं और उन्हीं पर से माता के भी कई प्रकार माने जाते हैं जैसे बड़ी माता, सेन्दरी, कोदैया आदि परन्तु माता-सेवा के गीत केवल बड़ी माता के निकलने पर गाये जाते हैं। इन गीतों को गाने वालों की मंड़ली होती है जिसमें सब पुरुष होते हैं। जिनके घर माता निकलती है वे मंडली को 'माता के दर्शन देने' का समाचार देते हैं। जिस व्यक्ति को माता निकलती है उसकी सफाई का पूर्ण ध्यान रखा जाता है। उसके पास नीम की पत्तियां रखी जाती हैं। माता सेवा के गीतों में अनेक बार लंगूर शब्द आता है जो कि पीड़ित व्यक्ति के परिचारक के अर्थ में माना जाता है परन्तु यथार्थ में इन गीतों में लंगूर शब्द 'लंगूरवीर' या ग्राम रक्षक देवता यक्षों के लिए आया है जो कि माता के सेवक माने जाते हैं। परिचारक भी माता से पीड़ित व्यक्ति की अर्थात् माता की सेवा करता है अतः लंगूर शब्द से उसका आशय भी लिया जाता है। मंड़ली के लोग जिन्हें 'सेवक' (सेउक) कहा जाता है रात्रि को पहुंचते हैं। माता-सेवा के गीत साधारणतः रात्रि को ही गाये जाते हैं। संगीत के साथ ये गीत पीड़ित व्यक्ति की पीड़ा कम कर देते हैं और संभवतः इनके मूल में यही भावना है। यह सेवा सात दिनों तक की जाती है। तब तक माता स्वयं शांत हो जाती है। माता सेवा के गीत 'माता-पहुंचानी' के अवसर पर भी गाये जाते हैं। असाढ़ माह में गुरुवार अथवा सोमवार को लोग सामूहिक रूप से माता की पूजा करने के लिए शीतला-मंदिर जाते हैं, इसे ही माता-पहुंचानी कहा जाता है। इस अवसर पर वे 'सेवा' गाते हैं। मंदिर में पूजा के समय पशुबलि भी दी जाती है। माता सेवा के गीतों में मुख्य रूप से माता की स्तुति, माता का श्रृंगार तथा विभिन्न रूपों का वर्णन तथा माता से रक्षा की प्रार्थना पायी जाती है।[22] इस अवसर पर ढोलक, झांझ, मंजीरा, दफड़ा या 'चांग' (चंग) तथा 'खलारन' (एक वाद्य विशेष जिसमें लकड़ी की चौखट में धातु के बिल्ले रहते हैं, जो हिलाने से बजते हैं।) आदि वाद्यों का प्रयोग किया जाता है।

जंवारा गीत:-

'जंवारा' शब्द शीतकाल में बोये जाने वाले एक अनाज जौ से बना है।

22. देखिए गीत ५५, ५६, ५७, ५८, ५९

छत्तीसगढ़ में जंवारा जो कि शक्ति या देवी का प्रतीक है वर्ष में दो बार बोया जाता है। प्रथम चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक तथा द्वितीय 'कुंआर' (आश्विन) शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक। जंवारा में गेहूं, उड़द, चना आदि पांच अथवा सात प्रकार के बीज घर के भीतर भूमि पर अथवा टोकनियों में देवी की स्थापना के पश्चात बोये जाते हैं। अंकुरित पौधों की सुबह-शाम पूजा-आरती की जाती है। जंवारा के सेवक इस अवसर पर जंवारा-गीत गाते हैं। इन गीतों में माता की आरती तथा विभिन्न देवताओं की स्तुति, उनके निवास, वाहन तथा भोजन आदि का वर्णन प्राप्त होता है। एक गीत में तो सोनपुर के राजा जयसिंग तथा दिल्ली के बादशाह अकबर को देवता माना गया है तथा उनका ब्रह्मा और शंकर के साथ 'बढ़ीमाय' के दर्शन के लिए जाने का चित्रण किया है।[23] जंवारा-गीतों के साथ ढोलक, झांझ, मंजीरा, चांग, खलारन आदि वाद्यों का उपयोग होता है।

भोजली के गीत:-

श्रावण में जब चारों ओर हरियाली बिखर जाती है तब श्रावण शुक्ल नवमी को भोजली बोयी जाती है। इसमें भी शीतकाल में उत्पन्न होनेवाले (उन्हारी के) पांच अथवा सात प्रकार के अनाज के बीज टोकनियों में बोये जाते हैं। अंकुरित पौधों को देवी मानकर पूजा की जाती है। इस अवसर पर तांत का बना एक वाद्य बजाकर नारियों द्वारा गीत गाये जाते हैं। इन्हें भोजली के गीत कहते हैं। भोजली के गीतों में भोजली का बढ़ना, उसकी पूजा, महत्व, 'उझोवना' आदि के साथ ही भाई-बहिन का प्रेम आदि के सुन्दर चित्र प्राप्त होते हैं।[24]

धनकुल के गीत:-

श्रावण अमावस्या अथवा हरेली (हरियाली) त्योहार के दिन प्रारम्भ होकर १ माह ४ दिन तक चलने वाले धनकुल नामक धार्मिक उत्सव के अवसर पर सन की रस्सी से बने धनुष की रस्सी को बांस की 'कमची' से बजाकर नारियों द्वारा गाये जाने वाले गीत धनकुल के गीत कहलाते हैं। इन गीतों में देवी तथा देवताओं का आवाहन मुख्य रूप से पाया जाता है।[25]

नागपंचमी के गीत:-

श्रावण शुक्ला पंचमी को नागपंचमी कहा जाता है। इस दिन नाग की पूजा की जाती है। इस अवसर पर मांदर, झांझ तथा मंजीरा बजाकर नागपंचमी

23. देखिए गीत ६०, ६१, ६२, ६३, ६४
24. ,, गीत ६५, ६६
25 ,, गीत ६७

के गीत गाये जाते हैं। नागपंचमी के गीतों के तीन भेद हैं। गुरुथोपनी में गुरु का महत्व बतलाया है। नाग–बिहावट में नागदेवता की प्रशंसा की गयी है तथा दुलार-गीतों में उस नाग से जिसने किसी को डंस लिया है दुलार से अथवा प्रेमपूर्वक अपना विष वापस ले लेने की अथवा विष उतार देने की प्रार्थना की गयी है।[26]

लोरियां व बच्चों के खेलों के गीत

मानव अपने जीवन का प्रथम गीत माता की गोद में थपकियों की लय पर, माता के गुनगुनाने के रूप में सुनता है। कुछ बढ़कर वही बालक जब बाहर खेलने जाता है, तो विभिन्न खेलों से संबंधित तुकबंदियां उसके कानों में गूंजने लगती हैं जिन्हें वह शीघ्र कंठस्थ कर लेता है। छत्तीसगढ़ में बच्चों से संबंधित जो गीत प्राप्त होते हैं वे निम्नलिखित हैं:–

लोरी

छोटे बच्चों को सुलाने के लिए जो गीत गाया जाता है उसे 'लोरी' कहते हैं। संगीत व गीत का प्रभाव सर्वमान्य है। मनुष्य ही नहीं पशु-पक्षी एवं पेड़-पौधों तक पर संगीत का प्रभाव आज के वैज्ञानिक युग में सिद्ध किया जा चुका है। माताएं संभवत: इस प्रभाव को अत्यन्त प्राचीन काल से जानती आयी हैं। नन्हें शिशुओं पर इन लोरियों का चमत्कारिक प्रभाव पड़ता है तथा वे शीघ्र ही निद्रा की गोद में चले जाते हैं। लोरियों की परम्परा अत्यन्त प्राचीन एवं व्यापक है। सभी देशों एवं जातियों में इस प्रकार के गीत पाए जाते हैं। छत्तीसगढ़ की लोरियों में शिशु के लिए स्नेहपूर्ण मनुहार एवं नींद का आवाहन ही मुख्य होता है:–

कोन तोला मारिन बाबू, कोन तोला पीटिन रे।
कोन तोला अंगुरी के बाबू, छड़ही देखाइन रे।

चंदा मामा आवनी, दूध भात खावनी।
बाबू के मुंह मां गपके, नोनी के मुंह मां गपके।

बच्चों के खेलों के गीत

छत्तीसगढ़ में कुछ ऐसे खेल खेलते हैं जिनके खेले जाने के समय वे कुछ पंक्तियां लयात्मक स्वर में गाते हैं। इनमें कुछ पंक्तियां तुकांत होती हैं, कुछ अतुकांत। कुछ एक व्यक्ति के द्वारा गायी जाती हैं, कुछ समवेत स्वरों में।

---

26. देखिए गीत ६८, ६९, ७०

वे निम्नलिखित हैं–

फुगड़ी :–

यह बालिकाओं का खेल है। इसके दो भेद हैं:–

१. बइठे फुगड़ी   २. खड़े फुगड़ी

१. बइठे फुगड़ी:– इस खेल में बालिकाएं बैठ जाती हैं और भूमि लीपने का अभिनय करती हुई गाती हैं–

गोबर दे बछरू गोबर दे,
चारों खूंटा ला लीपन दे,
चारों देरानी ला बइठन दे,
अपन खाये गूदा गूदा—
मोला देथे बीजा बीजा
ये बीजा ला काय करिहौं,
रहि जा हौं तीजा।

तीजा के बिहान भर सरीसरी लुगड़ा
हेर दे भौजी कपाट के खीला
चींव चांव करे मजूर के पीला।
एक गोड़ मां लाल भाजी
एक गोड़ मां कजूर।
कतेक ला मानों मैं हा
देवर ससुर।
राजा घर के पुतरी,
खेल 'फगनी' फुगड़ी ॥

गीत के समाप्त होते ही 'फुगड़ी रे फूं फूं' कहती हुई वे अपने पैरों को आगे पीछे करके फुदकने लगती हैं। जो बालिका सबसे अधिक समय तक फुदकती रहती है वह विजयी होती है।

२. खड़े फुगड़ी:– इस खेल में बालिकाएं क्रमशः दोनों पैरों को सामने की ओर फेंककर कूदती हैं तथा गाती हैं:–

आले आले डलिया
पाके बुंदलिया
राजा घर के पुतरी
खेल 'फगनी' फुगड़ी।

उपरोक्त दोनों गीतों में 'फगनी' एक बालिका विशेष का नाम है जो आवश्यकतानुसार परिवर्तित किया जा सकता है।

कांऊ मांऊ अथवा चांऊ मांऊ :-

इस खेल में बच्चे मंडलाकर बैठ जाते हैं और अपने दोनों हाथों को सामने अंगुलियों और अंगूठों के पोरों पर घोड़ों की भांति खड़े रखते हैं। खेलने वालों में से एक बच्चा एक एक घोड़े का स्पर्श करके यह गीत गाता है:-

अटकन मटकन दही चटाकन
लोहा लाटा बन में कांटा,
चूहुर चूहुर पानी आवे
सावन में करेला पाके
चल चल बेटी गंगा जाबो
गंगा ले गोदावरी,
पाका पाका बेल खाबो।
बेल के डारा टूटगे,
भरे कटोरा फूटगे।
आंगन मांगन दिया बारी।
कारी गोरी हाथ पसारी॥

एक-एक घोड़े पर वह एक एक शब्द उच्चारित करता चलता है। जिस घोड़े पर गीत समाप्त होता है वह बैठा दिया जाता है। इस प्रकार यह गीत बार बार दुहराया जाता है अंत में केवल एक घोड़ा खड़ा रह जाता है। बच्चे समवेत एवं लयात्मक स्वर में पूछते हैं:-

ये काकर घोड़ा।
घोड़ेवाला बच्चा- रामा जी के।
बच्चे- काबर आइस ?
घोड़ेवाला- पानी पिये बर।
बच्चे- हम मन मार दे बो।
घोड़ेवाला (धमकी के स्वर में)- रामाजो ला बता देबो।
बच्चे (जैसे डरकर, पुचकारते हुए)- पीले। पीले॥

यह कह कर उसे भी बैठा देते हैं। फिर सब बच्चे आपस में दोनों हाथों से एक दूसरे के कान पकड़ते हैं तथा 'कांऊ-मांऊ' अथवा 'चांऊ-मांऊ' चिल्लाकर बैठे बैठे ही शरीर को चक्राकार घुमाते जाते हैं और फिर एक हंसी के बीच खेल समाप्त हो जाता है।

डोंडी-पोहा:-

यह मुख्य रूप से बालकों का खेल है। इस खेल में मैदान में एक गोल घेरा खींचा जाता है। सब बालक घेरे के भीतर रहते हैं केवल एक बालक घेरे

के बाहर रहता है। खेल प्रारम्भ होने के पूर्व लयात्मक स्वर में यह प्रश्नोत्तर चलता है–

घेरे के बाहर वाला बालक– कु क रूंउ कूं।
घेरे के भीतर वाले बालक– काकर कुकरा ?
बाहर वाला बालक– राजा दशरथ के।
भीतर वाले– का चारा ?
बाहर वाला– कनकी कोंड़हा।
भीतर वाले– का खेल ?
बाहर वाला– डांडी पौहा।
भीतर वाले– कोन चोर ?
बाहर वाला– राम्।

बाहर वाला– रामू——(घेरे के भीतर वाले किसी बालक का नाम) नाम लेते ही उस बालक को छोड़कर शेष घेरे के बाहर हो जाते हैं। वह बालक फिर घेरे के बाहर के बालकों को घेरे के भीतर से ही छूने का प्रयास करता है। जो बालक छू लिया जाता है वह घेरे के भीतर वाले का साथी बन जाता है। इस तरह यह खेल उस समय तक चलता रहता है जब तक सब लोग घेरे के भीतर नहीं पहुंच जाते।

खुड़आ (कबड्डी):–

कबड्डी के खेल में विपक्षी दल में जाने वाला खिलाड़ी तुकांत पंक्तियां उच्चारित करता जाता है तथा सांस टूटने तक उसका अंतिम शब्द दुहराता रहता है।

उदाहरणार्थ

मरगे मदारीलाल
मोर मुछा लाल लाल – लाले लाल——

अथवा

खुड़वा डुड़वा नांगर के पत्ती।
भलवा गोदों तोर चेथी चेथी – चेथी चेथी चेथी——

भौंरा:–

भौंरा चलाने के पूर्व भी बच्चे ये पंक्तियां लय के साथ गाते हैं:–

लांवर में लोर लोर, तिखुर में झोर झोर
हंसा करेला पान, राय झूम बांस पान, सुपली में बेलपान
लट्ठर जा रे भौंरा, मुखर जा रे भौंरा।

बच्चों को बहलाने के गीत

घर के बड़े लोग प्रायः शिशुओं को पिंडलियों पर बैठाकर उन्हें झुलाते हैं तथा यह गीत गाते हैं:—

खेलत खेलत कौड़ी पाएन
उहो कौड़ी के नून बिसाएन
नून बिसा के गइया खवाएन
गइया खवा के दूध दुहाएन
दूध दुहा के खीर बनाएन
खीर बना के पहुना जेंवाएन
पहुना के जूठा ला बाबू खाय
बाबू के जूठा ला आजा खाय
आजा के जूठा ला आजी खाय
आजी के जूठा ला — — —

इस गीत के द्वारा शैशव से ही शिशुओं में अतिथि सम्मान की भावना जागृत करने का यत्न है।

बच्चों के अन्य स्फुट गीत

खेल के समय विभिन्न विषयों पर बच्चों में विवाद साधारण बात है। कभी कोई बालिका झगड़ी में हार कर एक ओर बैठ जाती है। विजयी बालिका उसे खिझाने के लिए गाती है :—

हारे भौजी हारे रे।
लीम तरी पसारे रे।।
लीम मोर भैया।
तैं मोर भौजइया।।

कभी कभी कोई बालक हार कर अथवा अन्य कारणवश कोई खेल नहीं खेलना चाहता, तब बच्चे उसे खेलने के लिए विवश करने के लिए उस पर 'किरिया-पाड' (शपथ) देते हैं। फिर भी वह बालक शपथ की उपेक्षा करके नहीं खेलता, तब शपथ का महत्व उसे ज्ञात कराने ले लिए बच्चे गाते हैं:—

नदिया के तीर तीर पातर सूत,
नि मानबे तो अपन बहिनी ले पूंछ।

वह शपथ का महत्व जानने लिए बहिन के पास जाए इसके पूर्व ही उसका कोई मित्र—

नदिया के तीर तीर पान सुपारी।
तोर किरिया ला भगवान उतारी।।

कह कर शपथ को प्रभावहीन कर देता है।

मनोरंजन के गीत

यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाए तो शोक-गीतों को छोड़कर हर प्रकार के गीतों में मनोरंजन की भावना कहीं न कहीं छिपी रहती है परन्तु कुछ ऐसे गीत भी होते हैं जो केवल मनोरंजन के लिए ही गाये जाते हैं। उनके साथ संस्कार, धर्म, अथवा पूजा विशेष की कोई भावना नहीं जुड़ी होती। इनका ध्येय केवल शुद्ध मनोरंजन होता है। शहरों से दूर, सुविधाओं से हीन, गांवों के लोगों ने अपने विशेष नृत्यों एवं गीतों के रूप में अपने लिए मनोरंजन के साधन जुटा लिए थे जो उन्हें कृषि आदि के कठिन श्रम के बीच एकरसता के नीरस जीवन में जीने का आवश्यक उत्साह एवं संबल प्रदान करते रहे। छत्तीसगढ़ में अनेक ऐसे गीत प्राप्त होते हैं जिनका ध्येय केवल मनोरंजन होता है। इन गीतों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।

१. नृत्य-गीत एवं २. अन्य गीत

नृत्य-गीत:-

नृत्य के साथ गाये जाने वाले गीत इस श्रेणी में आते हैं। इनमें प्रमुख निम्नलिखित गीत हैं:-

करमा-गीत डंडा-गीत नाच-गीत अथवा नचौरी

करमा-गीत:-

करमा-नृत्य न केवल छत्तीसगढ़ परन्तु आसपास के छोटा नागपुर तथा उड़ीसा आदि क्षेत्रों के आदिवासियों का भी प्रिय नृत्य है। इस नृत्य के साथ जो गीत गाये जाते हैं वे करमा गीत कहलाते हैं। यद्यपि करमा नृत्य एवं गीत एक धार्मिक पृष्ठभूमि में होते हैं परन्तु करमा गीतों में धर्म अथवा पूजा की भावना नहीं पायी जाती, वे आनंद और मनोरंजन के गीत ही हैं। इन नृत्य-गीतों का भी कोई एक निश्चित समय नहीं है। विभिन्न जातियां इनका आयोजन विभिन्न कालों में करती है। इनका आयोजन वर्षा के प्रारम्भ से लेकर फसल के कट जाने तक के लम्बे समय में होता रहता है। इन नृत्य गीतों के 'करमा' नामकरण के संबंध में भी अनेक मत प्रस्तुत किये जाते हैं। कुछ लोगों का मत है कि 'करम' (कर्म) देवता की पूजा के पश्चात् इन नृत्य गीतों का आयोजन होता है अतः इन्हें 'करमा-नाच' एवं 'करमा-गीत' कहा गया। यहां कर्म से आशय कुछ लोगों के अनुसार कर्म (कार्य) तथा कुछ अन्य लोगों के अनुसार भाग्य है। एक अन्य मत के अनुसार 'कर्म' नाम का कोई राजा था। उस पर विपत्ति पड़ी। उसने मनौती मानी और नृत्य गान प्रारम्भ किया, जिससे उसकी विपत्ति दूर हो गई। उसी समय से 'करमा-नृत्य' प्रचलित

हुआ।[27] छत्तीसगढ़ में इस अवसर पर करम (कंदब) वृक्ष की एक शाखा जंगल से लाकर नाच के स्थान के बीच में गाड़ दी जाती है। नृत्य के स्थान को 'अखाड़ा' कहा जाता है। करम वृक्ष की पूजा के पश्चात यह नृत्य प्रारम्भ होता है। इस नृत्य में स्त्री-पुरुष दोनों भाग लेते हैं। स्त्री-पुरुष आमने-सामने पंक्तिबद्ध होकर यह नृत्य करते हैं। गीत की एक पंक्ति गाते हुए झुककर इसमें आगे बढ़ा जाता है और दूसरी पंक्ति को गाते हुए सीधे होकर अपने पूर्व स्थान पर नर्तक लौट आते हैं। प्रत्येक करमा-गीत के तीन भाग होते हैं। राग, टेक तथा आड़। राग गीत के प्रारम्भिक भाग को कहते हैं जिसके द्वारा नाचने वालों को गाये जाने वाले राग का ज्ञान होता है तथा नृत्य की भूमिका बंधती है। उदाहरणार्थ:—

१. ऊ हो हे ऊ हो हे हे
२. ओ हा हा हे हे हे
३. ओ हो हो रे हो आदि।

गीतों का वह भाग जिसे नाचने वाले झूमते हुए बार बार दुहराते हैं टेक कहलाता है। नृत्य के अवसर पर जब युवतियां स्थिर होकर अपने शरीर को इधर उधर घुमाती हैं उस समय गाया जाने वाला गीत का अंश आड़ कहलाता है। गायन शैली पर आधारित करमा के पांच भेद होते हैं-१. झूमर, २. लंगड़ा, ३. लहकी, ४. ठाड़ा, ५. रागिनी।

झूम-झूमकर गाये जाने वाले गीत झूमर कहलाते हैं। एक पैर झुका कर जो गीत गाये जाते हैं, लंगड़ा कहलाते हैं। नाचने वाले लहर की भांति लहराते हुए जो गीत गाते हैं, लहकी कहलाते हैं। खड़े होकर जो गीत गाये जाते हैं उन्हें ठाड़ा कहा जाता है तथा रागरागिनी का स्पर्श लिए हुए गीत रागिनी कहलाते हैं। ये नृत्य-गीत रात भर चलते हैं तथा दूसरे दिन करम वृक्ष की शाखा को किसी जलाशय में ठंडा कर दिया जाता है। करमा गीतों का मुख्य स्वर श्रृंगार है। इन गीतों में श्रृंगार के दोनों पक्ष संयोग एवं वियोग मुखर हो उठे हैं।[28] कुछ गीतों में संसार की असारता का भी वर्णन पाया जाता है। इस अवसर पर मांदर, डफली, चटकोला (ताली की भांति स्वर उत्पन्न करने वाला वाद्य), ढोल आदि वाद्यों के प्रयोग के साथ ही नाचने वाले पैरों में घुंघरुओं के स्थान पर लोहे की पैजनी भी पहिनते हैं।

डंडा गीत:-

डंडा-नाच छत्तीसगढ़ की आदिवासी जातियों के अतिरिक्त राउत जाति

27. हिन्दी साहित्य का इतिहास : षोडश भाग : खण्ड २, अध्याय : ४, पृ. २९४
28. देखिए-गीत ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८

का प्रिय नृत्य है। इस नृत्य के साथ जो गीत गाये जाते हैं उन्हें डंडा गीत कहा जाता है। डंडा नाच केवल पुरुषों का नृत्य है इसे शैला नाच भी कहा जाता है। वर्षा काल की फसल के कट जाने पर ही यह नृत्य प्रारम्भ होता है। इसके लिए लगभग २५ युवकों की एक टोली होती है। ये रंगबिरंगे वस्त्र धारण कर मयूर पंख आदि से अपना श्रृंगार करते हैं। प्रत्येक युवक के हाथ में लगभग आधे मीटर की लम्बाई के डंडे रहते हैं। वृत्ताकार खड़े होकर नृत्य प्रारम्भ होता है। घेरे के मध्य में 'अगुआ' (नेता) तथा वाद्यमंडली बैठती है। राग, ताल एवं लय पर नर्तक के पग थिरक उठते हैं तथा कुछ कुछ समय के अंतर पर वे सब एक साथ दूसरे के डंडों पर अपने डंडों से प्रहार करते हैं। वृत्त के आधे व्यक्ति गीत की एक पंक्ति गाते हैं तथा अन्य उसे दुहराते हैं। नृत्य की गति एवं मुद्रा का नियमन एवं परिवर्तन अगुवा की 'उइ' की एक विचित्र ध्वनि से होता है जिसे 'हुंकारू मारना' कहा जाता है। यह दल विभिन्न गावों का भी भ्रमण करता है तथा सम्पन्न व्यक्तियों से धन एवं अनाज एकत्रित करता है। नृत्य का अन्त एक सामूहिक भोज में होता है। अंत में नृत्य के डंडों को एक साथ बांधकर किसी वृक्ष पर लटका दिया जाता है। डंडा गीतों में यद्यपि विषयों की विविधता होती है परन्तु इसका भी मूल स्वर श्रृंगार है और विशेष रूप से वियोग श्रृंगार।[29] डंडा नृत्य के अवसर पर मांदर, झांझ आदि वाद्य प्रमुख रूप से उपयोग में लाए जाते हैं।

नाच-गीत अथवा नचौरी:-

'नाचा' छत्तीसगढ़ का लोकप्रिय लोक-नृत्य है। इस नृत्य के साथ जो गीत गाये जाते हैं उन्हें नाच-गीत अथवा नचौरी कहते हैं। नाचा करने वालों की अपनी मंडली होती है। विभिन्न ग्रामों से उन्हें अपने कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रण प्राप्त होते हैं। रात्रि को भोजन के पश्चात गांव के लोग एक निश्चित स्थान पर एकत्रित होते हैं जहां नाचा के लिए एक छोटा-सा मंडप पहले ही डाल दिया जाता है। किसी विशेष मंच की आवश्यकता नाचा करने वालों को नहीं होती। दर्शक मंडप के चारों ओर बैठ जाते हैं तथा एक लघु स्तुति के पश्चात नाचा प्रारम्भ होता है जो रात भर चलता रहता है। नाचा नौटंकी से मिलता जुलता है। यदि इसे लोक-नृत्य के स्थान पर लोक-नाट्य कहा जाये तो अधिक उपयुक्त होगा। इसमें गद्य और पद्य दोनों का प्रयोग होता है। नाचा की एक वादक मंडली होती है। इसके अतिरिक्त दो 'जुलवा' (विदूषक) तथा एक स्त्री रूपधारी पुरुष (जनानी) होता है। ये तीनों ही मुख्य रूप से नाचा का कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। ये नाचते हुए गीत भी गाते हैं तथा बीच बीच में वार्तालाप भी करते हैं। इनके संवाद विशेष रूप से अवसरोपयोगी

29. देखिए—गीत ७९, ८०

एवं हास्य से पूर्ण होते हैं। इन गीतों में भी हास्य तथा व्यंग तो होता ही है साथ ही प्रेम, विरह एवं पारिवारिक जीवन के मार्मिक चित्र भी इनमें प्राप्त होते हैं।[30] ढोलक, मंजीरा, निसान आदि इस अवसर के प्रमुख वाद्य हैं। नर्तकों के पैरों में घुंघरू तो होते ही हैं। आजकल नाचा में हारमोनियम का उपयोग भी सामान्य बात है।

अन्य गीत

बिना नृत्य के गाये जाने वाले मनोरंजन के अन्य गीतों में निम्नलिखित गीत प्रमुख हैं:–

ददरिया बांस–गीत देवार–गीत

ददरिया:–

दो पंक्तियों के ददरिया गीतों को छत्तीसगढ़ी गीतों का राजा कहा जाता है। इसे 'बन–भजन' अथवा 'साल्हो' भी कहते हैं। दो पंक्तियों के गीत न केवल भारत में बल्कि चीन तथा स्पेन में भी यथेष्ट लोकप्रिय हैं [31] छत्तीसगढ़ में ददरिया खेतों, खलिहानों में कृषि कार्य करते हुए अथवा अन्य श्रम के कार्य करते समय स्त्री–पुरुष दोनों के द्वारा गाया जाता है। यह मुख्य रूप से प्रश्नोत्तर के रूप में होता है। पुरुषों में से कोई एक ददरिया गाता है तथा नारियों में से कोई एक ददरिया में ही उसका उत्तर देती है। इस भांति यह प्रश्नोत्तर चलता रहता है। ददरिया युवक–युवतियों, प्रेमी–प्रमिकाओं का प्रिय गीत है। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक हर प्रकार के भाव यद्यपि ददरिया में पाये जाते हैं परन्तु श्रृंगार ददरिया का भी मुख्य स्वर है। संयोग एवं वियोग के सुन्दर चित्रों के साथ ही व्यंग एवं उपालंभ आदि भी ददरिया गीतों में प्राप्त होते हैं।[32] कुछ ददरिया गीत ऐसे होते हैं जिनमें की प्रथम पंक्ति का कोई विशेष अर्थ नहीं होता अथवा द्वितीय पंक्ति से उसका कोई विशेष संबंध नहीं होता वह केवल द्वितीय पंक्ति के किसी शब्द विशेष से तुक मिलाने के लिए होती है परन्तु ऐसे ददरिया गीतों की कमी नहीं है जिनमें दोनों पंक्तियां संबंधित एवं सार्थक होती हैं। इसके लिए किसी वाद्य की आवश्यकता नहीं होती।

बांस–गीत :–

यह भी राउत जाति का एक प्रमुख गीत है। कृष्णानुयायी होने के कारण

---

30. देखिए–गीत ८१, ८२, ८३, ८४
31. फोक सांग्स आफ छत्तीसगढ़ : वेरियर एल्विन : पृष्ठ १८९
32. देखिए–गीत ८५ से ९८

राउत गोसेवक तो हैं ही, साथ ही श्रीकृष्ण की तरह इन्हें भी वंशी से विशेष स्नेह है। इनके पास लम्बे-मोटे बांस की बनी हुई एक बहुत बड़ी बांसुरी होती है जिसे 'बांस' कहा जाता है। इसी बांस को बजाकर ये गीत गाए जाते हैं अत: इन्हें बांस-गीत कहा जाता है। प्रणय एवं पारिवारिक जीवन के सुन्दर चित्र इन गीतों में प्राप्त होते हैं।[33]

देवार गीत:–

'देवार' द्रविड़ मूल की[34] एक भ्रमणशील जाति है। देवार व्यावसायिक लोक-संगीतकार एवं लोक-कलाकार हैं। नाच-गाकर अथवा बंदर-भालू आदि के खेल दिखाकर लोगों का मनोरंजन करना ही उनका व्यवसाय है। छोटी छोटी झोपड़ियों में वे रहते हैं। गधे तथा सूअर आदि भी वे पालते हैं। छत्तीसगढ़ के प्राचीन हैहयवंशी शासकों की दो राजधानियों – रतनपुर तथा रायपुर के आधार पर देवारों के भी दो भेद हैं–रतनपुरिया देवार तथा रायपुरिया देवार। रतनपुरिया देवारों का प्रमुख वाद्य 'घुंगरू' है तथा रायपुरिया देवारों का प्रमुख वाद्य 'सरांगी' अथवा किंदरी' अथवा 'रूंजू' है। पुरुष इन वाद्यों की सहायता से गुजरी गीत, सीताराम नायक, दसमत, ओड़निन आदि लम्बी गाथाएं तथा अन्य गीत गाते हैं। इस जाति की स्त्रियां हाथ हिला-हिलाकर चूड़ियां बजाती हैं तथा 'बीरम' नामक गीत गाती हैं। ये सभी गीत देवार-गीत कहलाते हैं।[35]

अन्य स्फुट गीत

भजन:–

धर्म तथा पूजा के गीतों के अतिरिक्त कुछ ऐसे गीत भी प्राप्त होते हैं जिनमें संसार की असारता तथा हरि-स्मरण पाया जाता है।[36] ये गीत भजन कहलाते हैं। मुख्य रूप से भजन भिक्षुकों के द्वारा गाए जाते हैं। देवारों तथा सतनामियों के भी भजन प्राप्त होते हैं। इनके अतिरिक्त कुछ लोग दैनिक पूजा के अवसर पर भजन गाते हैं। देवार लोग 'किंदरी' तथा सतनामी लोग 'एकतारा' अथवा 'तम्बूरा' बजाकर भजन गाते हैं। घरों में घंटियां, मंजीरा तथा तालियां बजाकर भजन गाते हैं।

---

33. देखिए–गीत ९९
34. ट्राइब्स एन्ड कास्टस् आफ सेन्ट्रल प्राविन्सेज : रसेल एन्ड हीरालाल : वाल्यूम २ : पृ. ४७२
35. देखिए–गीत १००
36. –वही– गीत १०२, १०३, १०४, १०५

कबीर पंथियों तथा सतनामियों के रहस्यवादी पद:-

छत्तीसगढ़ में ब्राह्मण विरोधी कबीर पंथ एवं सतनामी पंथ का यथेष्ट प्रचार है।

कबीर पंथ के प्रवर्तक प्रसिद्ध संत कबीर का जन्म उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले के अन्तर्गत मगहर[37] नामक स्थान में हुआ था। १५ वीं शताब्दी में उनके कबीर पंथ का प्रचार हुआ। छत्तीसगढ़ में कबीर के प्रमुख शिष्य धर्मदास के वंशज कबीर पंथियों के गुरु होते हैं जिनकी प्रधान गद्दी पहले कवर्धा में तथा वर्तमान काल में रायपुर के दामाखेड़ा नामक ग्राम में है।[38] कबीर पंथियों के छत्तीसगढ़ी पदों में धर्मदास के पद तथा अन्य उलटबासियां[39] प्राप्त होती हैं जिनमें कबीर के पदों की भांति ही ज्ञान, सुरति, पांच सखी के मंगल गाने आदि का वर्णन है।

उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जिले के सरदहा ग्राम में उत्पन्न जगजीवन दास द्वारा प्रवर्तित सतनामी पंथ वैसे प्राचीन है परन्तु छत्तीसगढ़ में इनके संस्थापक चमार जाति में उत्पन्न घासीदास माने जाते हैं। उनका जन्म रायपुर जिले की बलौदा तहसील के गिरौद गांव में हुआ था। छत्तीसगढ़ में सतनामियों की संख्या १५ लाख से अधिक है। वे मूर्ति की उपासना नहीं करते तथा सत्य को ही ईश्वर मानते हैं।[40] सतनामी गुरुओं की गद्दी रायपुर जिले के भंडार ग्राम में है। सतनामियों के भजनों एवं पदों में कबीर पंथी विचारों का प्रभाव स्पष्ट दिखलाई पड़ता है।[41]

पंथी गीत:-

पंथी गीत मुख्यत: सतनामी जाति का गीत है। 'पंथ' शब्द समुदाय के अर्थ में प्रयुक्त है अत: पंथी गीत में यद्यपि गुरु घासीदास की जीवनी तथा सतनामी धर्म का ही वर्णन मुख्यत: होता है किन्तु कहीं-कहीं अन्य विषय के भी पद गाए जाते हैं।[42] इस गीत के साथ नृत्य भी होता है।

---

37. संत कबीर (संक्षिप्त) : डा. रामकुमार वर्मा : पृ. २९
38. छत्तीसगढ़ी मासिक : अप्रेल १९५५ : पृ. १५
39. देखिए–गीत १०६, १०७
40. छत्तीसगढ़ के लोक-गीत : दानेश्वर शर्मा : पृ. ९४
41. देखिए–गीत १०८, १०९
42. –वही– गीत ११०, १११

—— ० ——

छत्तीसगढ़ी लोक-गीत

सोहर

(१) विघन हरन गन नायक, सोहर सुख गावथंव ।
सातो धन अंगिया के पातर, देवकी गरभ में रहय वो,
बहिनी, विघन हरन गन नायक, सोहर सुख गावथंव ।
साते सखी आगे चलय, साते सखी पीछे चलथ, बहिनो
बीच में दशोमती रानी चलत हे, जमुना पानी बर वो, बहिनी
कोनो सखी बोहे हावय हवला, मोर कोनो बटलोइहा ला वो,
कोनो सखी बोहे माटी के घइला, चलत हे जमुना पनिहा वो । बहिनी
विघन० – –
सोन के गुड़री रूपे के घइला मोर, दशोमती बोहे हावय वो,
बहिनी जाय जमुना तीर खड़ा होवय, मोर दशोमत बोलन लागय जो ।
बहिनी०
कोनो सखी हाथ पांव धोवय मोर, कोनो मुख मंजन करै वो,
बहिनी कोनो सखी जमुना पार देखै, देवकी रोवन लागै वो । ललना
विघन ० – –
दसोदा रानी मन मं गुनय, अउ सोचन लागय वो,
बहिनो मंय कइसे ओ नहकवं, जमुना धार, जमुना तो बैरिन भये वो,
इहां कुछु नांव नइये, कोन्हों घाट के घटोइया नइये वो ।
नहीं तो दिखै खेवैया, मंय कइसे जमुना पार नहकंव वो । बहिनी० – – –
भिरं कछोरा मुड़ उघरा, दसोदा जमुना मां धंसगे वो,
बहिनी तउरत तउरत ओपार, देवकी ला समझाय बर वो । ललना० – –
का तोला सासे गारी दे, ननंद संग दुरमत भये वो,
का तोर सैंया परदेसिया, तेखर दुख रोवत हावस वो । बहिनी – – –
ना मोला सास गारी देये, नही ननंद संग दुरमत भये वो,
बहिनी ना मोर सैंया संग दुरमते, कोखे के दुख रोवथंव –। । ललना ० – –
सात बेटवा राम दिये मोला, सकल कंस हर लिये वो,

बहिनी आठवें गरभ मोला लागै, मंय कइसे के भरोसा करौं वो।
बहिनी ० — —
तब मुख बोलै जशोमत रानी, तैं सुनले देवकी बहिनी वो,
मैं अपनो ला लेंहव बचाये, मैं तोरो ला बचाइ लेहौं वो। ललना० — —
चुप चुप देवकी मैं काम करि आइहंव वो, बहिनी अपन बालक ला मैं तो
देवत हवं वो।
तब मुख बोले देवकी रानी, तोरी जीव हावय वो,
नून अउ तेल के उधारी होये, अउ पइसा के उधारी होथय वो
बहिनी मोर कोख के उधारी नइ होवय, कइसे के भरोसा करौं वो।
ललना ० — —

— ० —

(२) पहिली महीना जब लागिस अंग फरिआइस
अंग पियर मुंह दुरदुर गरभ के लच्छन हो।
दूसर महीना जब लागिस सास गम पाइस
जेवनी गोंड़ पिछलाय जिया मचलाये हो॥
तीसर महीना जब लागिस ननद मुसकाइस
हो है लाल कन्हैया पंच लर पावब हो॥
चौथा महीना जब लगिस सास पुलकाइस।
हो ही कुल रखवारे मोतियन लुटइहौं हो।
पांच महिना जब लागिस बहू माटी खाइस
बीरा पान न भाय मुह सिट्ठाइस हो॥
छै महीना जब लागिस पिया के पग लागिस
आवों न पलंग तुम्हार अंग मोर भारी हो॥
सात महीना जब लागिस सास तिर रोइस
अब नहि भीतर अमांव दरद मोला बियापिस हो।
आठ महीना जब लागिस अंग भरि आइसै
कैसे के पहिनै चीर न सम्हरे सम्हरे हो॥
नव महीना जब लागिस सास तोर मां सोइस
कब उठ जाही पीर सुइन घर दौड़े हो।
दस महीना जब लागिस कन्हैया जनमिस
बजत अनंद बधैया मंगल सब गावैं हो॥

— ० —

(३) रहेंव मैं कतेक उपास जोरेंव दूनों हाथ ही
ललना लइका ला पाएंव मैं आज मोर मन हुलासे हो।
सुरहिन गैया के गोबर मंगावेय खूंट धरि अंगना लिपाएंव हो।

ललना गज मोतियन के चौक पुरायेंव, सोनकर कलस मड़ाएंव हो।
ललना सुआ मेर खबर भेजाएंव हो।
चन्दा चंदैनी ला बलाएंव, ओखर संग खेलायेंव हो।
ललना लागौं सुरुज पैंया, आज जागिस मोर भाग हो।
गावत सोहर सुख लागै, मंगल गावंव हो।
ललना लाल जियें जुग हजार कयौं बार बार हो॥

— ० —

(४) गुरु गनपति के चरन मनाएंव दाई।
जिभवा में सरसती आवय रे ना।
मनायेंव महादेव रितोयेंव पानी सब दिन।
बेलकर पान चढ़ाएव धोवा चाउर।
तभे तो मोला चिन्ह दिस वो।
रहि रहि सोहर ला गाववं हो।
मने में सुख ला पाववं हो॥
सास मोला पूछै ससुर सुख लागै, जोड़ी के छाती फूलय हो।
बड़ मलमलहीं ननद मोर रानी, बाबू ला पाके झुलावय हो।
जोरि के दूनों हाथ गुन गावंव जोडी ला गोहराऔं हो।
सुन पति देवता तुं ही ला एदे कहिथंव, बाबू के तोला भार होना।
तोर मोर मया के चिन्हारी ला देखि डारिस संसार हो ना।

— ० —

(५) ननदी बलायेंव उहू नइ आइस।
ननदी हो हमार का करि लेहव।
बहिनी बलाके कांके मड़ाबोन।
हम छबीली सबे के काम आबोन।
नंदोइ बलायेन उहूं नइ आइन।
नंनदोइ हो हमार का करि लेहव।
भांटो बलाके नरियर फोरा लेबोन।
हम छबीलो सबे के काम परबोन।
जेठानी बलायेन उहूं नइ आइन।
जेठानी हो हमार का करि लेहव।
भौजी बलाके सोहर गवाबोन।
हम छबीली सबो के काम परबोन।
जेठजी बलायेन उहूं नइ आइन।
जेठ हो हमार का कर लेहव।

भाई बलवाके बन्दुक छुटवाबोन।
हम छबीली सबो के काम परबोन।
ससुर बलालेंव उहूं नइ आइन।
ससुर हो हमार का करि लेहव।
बापे बलवाके नाम धरवाबोन।
हम छबीली सबो के काम परबोन।
सासे बलालेंव उहूं नइ आइन।
सासे हो हमार का कर लेहव।
दाई बलाके ठुढ़ी बंधवाबोन।
हम छबीली सबो के काम आइबोन।

— ० —

(६) धीरे धीरे बाजथे मोर आनन्द बधइया।
बाजे आनन्द बधइया ओ।
मोरो तो ननदी झन सुनय ओ।
अहो ललना मोरो तो ननदी झन सुनय ओ।
हमरो भाइ के होय हावे ललना।
हमू काजर आंजे ला जाबोन ओ।
संइया चघे घोड़वा, हमू चघबो डोलवा।
थारी भर मोहर पाबो ओ।
मांगो मांगो वो ननदिया।
मन चाहे तुम्हार।
कपड़ा अउ ओढ़ना झन मांग ओ बाई
मोर पेटी के सिंगार।
लहंगा देहूं अउ देहूं चुरी पाइ।
मांगो मांगो वो ननदिया।
लइका – नोनी झन मांग बाई।
मोर गोदी के सिंगार।
भइया ला देहूं भतीजा ला देहूं।
देहूं छक्का चार।
बरतन भंडवा झन मांग ओ बाई।
मोर चउका के सिंगार।
लोटा देहूं थड़ाकार।
गहना झन मांग, मोर अंग के सिंगार।

— ० —

बिहाव

चुलमाटी

(७) तोला माटी कोड़े ला नइ आवे मीत धीरे-धीरे
तोर कनिहा ला ढील धीरे-धीरे
जतके परोसय ओतके ला लील धीरे-धीरे।

— ० —

तेलचघी

(८) एक तेल चढ़िगे हो, हरियर हरियर
मंड़वा मा दुलरू तोर बदन कुम्हिलाय
राम लखन के, तेल ओ चढ़त हे
कहंवा के दियना होवै अंजोर।

— ० —

(९) हरियर हरियर मोर मंड़वा मां दुलरू वो
कांचा तिला के तेल
कोने तो लानिथय मोर हरदी सुपारी वो
कांचा तिला के तेल
ददा तो लानिथय हरदी सुपारी वो
दाई आनय तिला के तेल
कोन चढ़ाथय तोर तन भर हरदी वो
कोन देवय अचरा के छांव
फूफू चढ़ावय तोर तन भर हरदी वो
दाई देवय अंचरा के छांव
राम लखन के मोर तेल चढ़त हवे
बाजा के सुनव तुम तान।

— ० —

(१०) कहवां हरदी कहवां हरदी, तोर जनामन,
कहवां लिये अवतार।
मरार पारा मरार पारा, दीदी मोर जनामम,
पिरथी मां लिएंव अवतार।
कहवां रे करसा, कहवां रे करसा, तोर जनामन,
कहवां लिए अवतार।

करिया भिमोरा करिया भिमोरा दीदी मोर जनामन,
कुम्हरा वो पारा मां लिएंव अवतार ।
कहवां रे माउर कहवां रे माउर, बाबू तोर जनामन,
कहवां तैं लिए अवतार ।
जंगल झाड़ी, जंगल झाड़ी, दीदी मोर जनामन,
मरार वो पारा मां लिएंव अवतार ।
कहवां रे पर्रा रे कहवां रे पर्रा बाबू तोर जनामन,
कहवां लिये अवतार ।
पहाड़ परवत, पहाड़ परवत, दीदी मोर जनामन,
कंड़रा ओ पारा दीदी लिएंव अवतार ।।
हमरे हमरे दुलही राय बड़ सुकुमारी,
पेरि देवे तेलिया ओ कांचा वो तिल्ली के तेल ।

— ० —

मायमौरी

(११) देव धामी ल नेवतेंव
उन्हूं ल न्योत्यौं
जे घर छोड़िन बारे भोरेन
ता घर पगुरेन हो
माता पिता ला न्योत्यंन
उन्हूं ल न्योत्येन

— ० —

नहडोरी

(१२) दे तो दाई, दे तो दाई असी ओ रुपैया
सुन्दरि ला लानत्यौं बिहाय
सुन्दरि सुन्दरि रटन धरे बाबू
सुन्दरि के देस बड़ दूर
तोर वर लानिहौं दाई, रंधनी परोसनी
मोर वर घर के सिंगार ।

— ० —

परघनी

बड़े बड़े देवता रेंगत हें बरात
बरमा महेस
लिली हंसा में रामचन्द चघत हे
अउ लछिमन चघे सिंग बाघ

नहमत रेंगत डांडी अउ डोलवा
नाचत रेंगथे बरात
कै दल रेंगथे मोर हाथी अउ घोड़वा
कै कै दल रेंगथे बरात
हाथी मां लादथे दारु अउ गोली
कै उंटवा मां बान चवान
कै दुइ घोड़वा सहस दुइ मोहथिया
पंगा के हावे अनलेख
लाली अउ पिंवरी बरतिया दिखत हे
के कते दल दुलरु दमाद
झीना पिछौरी के अलगा डारे हे
के यही हर दुलरु दमाद
महाल ले देखथे दुलहि केर भैया
केतके दल आवथे बरात
अपन सहर मां महादेव पंहुचे
के दुनिया के आवथे देखइया
निकरव कइना अपन महल ले
कि डोलवा परिखन लागव
नइ मैं निकरवं राजा अपन महल ले
कि डोलवा परिखय तोर बेटा
एक तोर परिखय तोर भाई भतिजवा
एक परिखैं ममा के बेटा
पानी के बूंदे वो सउते के बोली
कइसे मां जनम पहाहै
एक मिली रहि हो, एक मिलि खइहो
एक मिली जनम पहा है
एक मिली कुटि हो, एक मिलि पिसि हो
एक मिलि महादेव के सेवा ला करिहो।

— ० —

भड़ौनी और गारी

(१४) अमा पान के बिजना
हालत झूलत आथे रे
किसबिन के बेटा हर
बरात लेके आथे रे

करिया करिया दिखथव दुलरू
काजर कस नइ आंजेव रे
तोर दाइ गेहे पठान घर
घर घर बासी मांगेच रे।

— ० —

(१५) गावें के तीर मां लुरगे बरतिया, लुरगे बरतिया
बरा खावो बरा खावो कहिथें रोगहा मन
पानी पीबो वानी पीबो कहिथें
कहां ले पानी पावे।

— ० —

१६) बड़े बड़े तोर, अंखियां दुलरू, कजरा कस नहिं आंजे रे
तोर दाई गे लोहार संग, गोहने कसनी लागे रे॥

— ० —

(१७) काकर बर सीताराम, काकर बर भेजौं सलाम
छोटकी ल कहि देबे, सिरी सीताराम
बड़की ल कहि देबे, दोहरी सलाम
सावन में फूले सावन करेलिया राम,
भर भादों मां कुसियार
पांच गड़री तोर मइके मा छोड़े राम,
दस चले हे ससुरार
डिडवा ल गरजे मोर कारी नागिन,
आड़ा ल बोले भिंगराज
मड़वा ल गरजे मोर सातो सुहासिन,
देखे सहर के लोग
भाठा ल चमके मोर भूरी भंइस राम
कोठा ल चमके कलोर
मड़वा ल मोर चमके समधिन छिनरिया
देखे सहर के लोग

— ० —

भांवर

(१८) कामा उलोथे कारी बदरिया
कामा ले बरसे बूंद
सरग उलोथे कारी बदरिया
धरती मा बरसे बूंद

काकर भींजे नवरंग चुनरी
काकर भींजे उरमाल
सीता के भींजे नवरंग चुनरी
राम के भींजे उरमाल
कैसे के चिन्हव सीता जानकी
कैसे चिन्हव भगवान
कलसा बोहे चिन्हेंव सीता जानकी
मकुट खोंचे भगवान
कामा में चिन्हव सीता जानकी
कामा में चिन्हव भगवान
जामत चिन्हेंव अटहर कटहर
मौरत चिन्हेंव आमा डार
चउक मां चिन्हेंव सीता जानकी ला
मटुक मां चिन्हेंव राम
आगू आगू मोर राम चलत हे
पाछू लछिमन भाई
अउ मंझोलन मोर सीता जानकी
चित्रकूट बर चले जाई।

— o —

दहेज (टाइज)

(१९) हलर हलर मोर मड़वा हाले
खलर खलर टाइज परे
सुरहिन गइया के गोबर मंगइले
खूट धरि अंगना लिपइले
गज मोतिन कर चौक पुरइले
सोने कलस धरइले
कोन देवैं मोर अचहर पचहर
कोन देवैं धेनू गाय
ददा मोर टिकथे लिलि हंसा घोड़ा
दाइ मोर टिकथें अचहर पचहर
भइया मोर टिकथे कनक के थार
भौजी कहा किया काम।

— o —

बिदा

(२०) नीक नीक लुगरा निमार ले वो,
हाय ! हाय! मोर दाई
बेटी पठोवत आंसू ढारे वो
नोनी के छूटगे महतारी वो
हाय! हाय! मोर दाई
बूता तो होगे भारी वो
चार दिन खीसत दाई तँहर वो
हाय! हाय! मोर दाई
मया मजब तँहर करस वो
नोनी के घर आज टूटगे वो
हाय ! हाय ! मोर दाई
रोवथे डण्ड पुकारे वो
पहुंना तो नोनी अब बनवे वो
हाय ! हाय ! मोर दाई
बेटी के बिदा तुम करिदव वो।

—०—

(२१) दाई के रेहेंव में रामदुलारी
दाई तोरे रोवय महल वो
अलिन गलिन दाई रोवय
ददा रोवय मूसरधार वो
बहिनी बिचारी रोवत हावय
भाई करय डण्ड पुकार वो।
तुम मन रइहव अपन महल मां
दुख ला देइहव भुलाय वो
अंसुवन तुम झन ढारिहव बहिनी
सबे के दुखे बिसार वो
दुनिया के ये हर रीत हे नोनी
दिये हे पुरखा चलाय वो
दाई ददा के कोरा मां रेहेंन
अचरा मां मुह ला लुकाए वो
अपन घर तुमन जावव बहिनी
झन करव सोच बिचार वो।

—०—

पठौनी (गौना)

(२२) दुध के रांधेव दुध खिचरी मोर बहिनी
खायेन जंविया [illegible]
पहली कौंरा के उठाती में बहिनी
पहुंचिन ससुर के लोग
दुसर कौंरा के उठाती मां
सथरा ला दियेंव सरकाय
तीसर कौंरा के उठाती में पंहुचे संदेसिया
ससुरे के सुअना
ओ खबरिया गा ददा मोर
पिंजरा ल दिये छटकाय
सिया के सियरिया छोड़ेंव
डीह के ठाकुर छोड़ेंव
भइया के में पाठ छोड़ेंव
देस ले बिदेस भयेंव
राज ले बिराज होगेंव
चिरइ बसेर करेंव
हंसा बसेर करेंव
पर के पुतर बर दाई में संग लगेंव
संझिया खवाये घी लोंदी ओ दाइ मोर
अधरतिया चना के दार
कुकरा के बासत दुध खिचरी ओ दाई
में कोन दिन करिहों छुटान ओ दाई
बेटा रहितेंव तोर घर मा रहितेंव
बेटी भयेंव बिरान ओ दाई
आज चिरंया रनबन रनवन ओ दाई
काली चिरंया बड़ दूर ओ दाई
आज के चन्दर नियरे तियरे रहिथे ओ बहिनी
कालो के चन्दर बड़ दूर ओ बहिनी।
ददा मोर कहिथे कुंआ मां घंसि जइतेंव
बबा कथे लेतेंव बैराग ओ बेटी
काबर ददा कुंआ मा घंसि जइबे
काबर बबा लेबे बैराग
बालक सुअना पढ़न्ता मोर ददा
मोला झटकिन लाबे लेवाय

बाट के महुआ डिग डोलवा मोर कका
मोला झटकिन लावे लेवाय
छोटे हीं सारो बचन पियारी अगा मोर भांटो
मोला झटकिन लावे लेवाय
भरे दरबान ले भाई बोले अओ मोर बहिनी
छिन भर कोरवा ब बेंव
गोदी के हमावत ले मोर गोद मां रेहे
अब आज ले भये विरान अ ओ मोर बहिनी।

—०—

फाग

(२३) अजोध्या मां राम खेलें होरी।
अजोध्या मां राम खेलें होरी॥
अरे बजे नगाड़ा दसों जोड़ा।
अजोध्या मां राम खेलें होरी।।

—०—

(२४) होरी खेलन गये गिरधारी।
होरी खेलन गये बनवारी॥
काकर हाथ मां रंग कटोरा।
काकर हाथ मां पिचकारी॥
राधा के हाथ मां रंग कटोरा।
कान्हा के हाथ मां पिचकारी॥
होली खेलन गये बनवारी

—०—

(२५) ये हो मोहन खेले होली गंगा बृजभान के दुलारी।
काकर हाथ मां रंग कटोरा काकर हाथ मां पिचकारी॥
गंगा बृजभान के — — — — — दुलारी।
राधा के हाथ मां रंग कटोरा
कान्हा के हाथ मां पिचकारी
ए हो गंगा बृजभान के — — — — — दुलारी॥

—०—

(२६) कहि देबे कहि देबे कहि देबे रे
आज होइ है महोबा मां फाग होरा ला कहि देबे रे
कौन बजाये ढोलकिया, ढोलकिया रे कौन बजाये सितार,
सुवना ला कहि देबे रे

आल्हा बजाये ढोलकिया ढोलकिया रे ऊदल बजाये सितार,
सुवना ला कहि देबे रे

— ० —

(२७) मोहन खेले होली मोहन खेले होली, संग वृजभान के दुलारी
काकर भिजगे अमड़ी पगड़ी काकर भिजगे साड़ी ?
काकर भिजगे चोली, कोन रंग डारी कोन रंग डारी ?
संग वृजभान के दुलारी
राम के भिजगे अगड़ी पगड़ी सीता के भिजगे साढ़ी
राधा के भिजगे चोली, मोहन रंग डारी मोहन रंग डारो,
संग वृजभान के दुलारी

— ० —

(२८) मन हर लियो जाय छोटे से श्याम कन्हैया मन हर लियो जाय
छोटे छोटे रुखवा कदम के भुईयां लहसे डार, भुईयां लहसे डार
बीच में मिलगे कन्हैया गल लियो लपटाय, छोटे से श्याम कन्हैया
सांकुर खोर गोकुल के राधा दहिया बेचन जाय
राधा दहिया वेचन जाय
राह में मिलगे कन्हैया दही लुट लुट खाय,
छोटे से श्याम कन्हैया ।

— ० —

(२९) श्याम बजा गयो बीना हो एक दिन श्याम बजा गयो बीना
चैत भगती, बैसाख लगती, जेठ असाढ़ महीना
सावन में गोरी झूले हिडोलना, भादो मस्त महीना
— — — एक दिन श्याम बजा गयो बीना
कुंवार भगती, कातिक लगती अगहन ष महीना
माघ में गोरी मकर नहावै, फागुन मस्त महीना
— — — एक दिन श्याम बजा गयो बीना
सुंदर सेज बिछे अंटा पर, पौढ़े नारी नगीना
चोली के बंद तड़ातड़ टूटे अंचरा पोछे पसीना
— — — एक दिन श्याम बजा गयो बीना

— ० —

(३०) असल भइगे राम खावे ते खाले
सावन मां बीर-धार
भादो मां बइरसा
क्वार मां बरा खालें
कातिक मां अरसा

अघ्घन मां जाम खाले
पूस खाले पिकरी
माघ मां ठुठुर ठाठर
फागुन मां ठेठरी
चैत मां चना खाले
बैसाख खाले लाटा
जेठ मां डूमर खाले
असाढ़ खाले भांटा

— ० —

सवनाही

(३१) दुई दिन वर जोड़ी मोला मइके अमराइ देते
ना रहवं मय आठे दसे दिन न रहवं पंदराही
कहो तो मय काली जइहों तेखर बिहान अइहों
मइके अमराइ देते—
दुई दिन रांधहू दुई दिन खाहू, लइका ला तुम रखिहो न
मोर आवत बुता ला करिहौ, सुरता ला झन करिहो न
मइके अमराइ देते—

— ० —

छेर छेरा-गीत

(३२) छेरी के छेरा छेर बरकनिन छेर छेर
माई कोठी के धान ला हेर हेर।
धनी रे पुनी रे ठमक नाचे डुवा—डुवा
अड़ा के घर बनाएवं पथरा के धुड़ी गुड़ी
तीर तीर मोटियारी नाचे मांझा मां डुई डुई
छेरी के छेरा छेर बरकनिन छेर छेर
माई कोठी के धान ला हेर हेर।
तारा रे तारा लोहार घर के तारा
लउहा लउहा बिदा करव जावो अपन पारा॥

— ० —

राउत-नाच के दोहे

(३३) गौरी के गनपति भये, अंजनी के हनुमान रे।
कालिका के भैरव भये, कौसिल्या के लछमन राम रे॥

— ० —

(३४) गाय चरावै गहिरा भैया, भैंस चराय ठेंठवार रे।
चारौं कोती बहुंत बोहावै, दही दूध के धार रे॥

— ० —

(३५) गउ माता के महिमा भैया, नी कर सकौं बखान रे।
नाच कूद के जेला चराइस, कृष्णचन्द्र भगवान रे॥

— ० —

(३६) नारी निंदा झन कर दाऊ, नारी नर कें खान रे।
नारी नर उपजावै भैया, धुरू – पहलाद समान रे॥

— ० —

(३७) दू दिन के दुनिया मां संगी, झन कर बहुते आस रे।
नदी तीर के रुखड़ा भैया, जब तब होय बिनास रे।

— ० —

(३८) तेल फूल मां लइका बाढ़ै, पानी मां बाढ़ै धान रे।
बात बात मां झगरा बाढ़ै, अउ खिनवा मां बाढ़ै कान रे॥

— ० —

(३९) पांव जान पनही मिलै, घोड़ा जान असवार रे।
सजन जान समधी मिले, करम जान ससुराल रे॥

— ० —

सुआ-गीत

(४०) पहिली गवन के मोला डेहरी बैठाये,
नरे सुवा हो छोड़ के चले बनिजार,
काकर सन खेलहूं, काकर सन खाहूं,
काला रखौं मन बांध, नरे सुवाहो,
छोड़ के चले बनिजार।

खेलबे ननद सन, सास सन खाबे,
छोटका देवर मन बांध, नरे सुवा हो,
छोड़ के चले बनिजार।

पिवरा पाती सन सासे डोकरिया, ननद पठोहूं ससुराल
छोटका देवर मोर बेटवा सर के, कइसे रखौं मन बांध
नरे सुवा हो छोड़ के चले बनिजार।

तोर अंगना मां चंवरा बंधा ले
कि तुलसी ला देवे लगाय
नित नित छुइबे नित नित लीपबे
कि नित दिन दियना जलाय

तुलसा के पेड़ ह हरियर हरिहर
कि मोर नायक करथे बनिजार
जब तुलसा के पेड़ झुरमुर आही,
कि मोर नायक गये रन जूझ

— ० —

(४१) अरसी फूले सुनक झुनुक गोंदा फूले छतनार
भल सुआ हो कि गोंदा फूले छतनार
वोहू गोंदा ला खोंचे नइ पायेंव
आगे ससुर लेनहार
ससुरे के संग में नि जावं ओ दाई
रद्दा मां आंखी बताथे
वोहू गोंदा ला खोंचे नि पायेंव
आगे देवर लेनहार
देवर संग में नइ जावं ओ दाई
रद्दा मां ठठ्ठा मढ़ाथे
वोहू गोंदा ला खोंचे नि पायेंव
आगे सैंया लेनहार
सैंया संग में बइ जावं वो दाई
रद्दा मां सोंटा जमाथे
वोहू गोंदा ला खोंचे नि पायेंव
आगे सास लेनहार
सासे के संग में नइ जावं वो दाई
रद्दा मा अक्कल बताथे
भला सुआ हो रद्दा मां अक्कल बता थे
अरसी फूले — — —

— ० —

(४२) ऊपर राज ले आगे मोरे जोगिया बैरागिया रे सुवना
वो तो छेंकि बैठिस धरम दुआर
रे सुवना वो तो छेंकि बैठिस धरम दुआर —
मुठा भर चाउर देइ दे जोगिया बैरगिया ल रे सुअना
वो तो छांड़ि दिही धरम दुआर
मुठा भर चाउर तोर घर भर जाय बहिनी
में तो नइ छाडंव धरम दुआर
थारी भर चांउर देइ दे जोगिया बैरगिया ल रे सुअना
छोड़ दिही ओ तो धरम दुआर

थारी भर चाउर मां तोर घर भरि जाय रे सुअना
मैं तो नी छोड़ौं धरम दुआर
बड़की ननंद ल देई देबे जोगिया वैरगिया लरे सुअना
ओ तो छांड़ि दिही धरम दुआर
छोटकी ननंद ल देइ दे जोगिया वैरगिया लरे सुअना
ओ तो छांड़ि दिही धरम दुआर
अतका ल सुन के बहिनी जोगिया बैरगिया हर रे सुअना
ओ तो लेइ लानिस डोलवा फंदाय
रे सुअना ओ तो लेइ लानिस डोलवा फंदाय।

— o —

(४३) तरी नरी न न ना तरी नरी ना ना
सुअना रे सुअना भई मोरे सुअना रे।
अंगरी ल मोरि मोरि देवरा जगाये रे
दुर रे, कुकुरवा, दुर दुर बिलइया
फेर कोन पापी हेरथे कपाट
नो हंव कुकुरवा नो हंव बिलइया
तोर छोटका देवर नंदलाल
आये बर अइहा बाबू मोर घर मां
फेर सुति जइहव भइया के पलंग
भइया के पलंग भउजी भुसड़ी चाबत हे
फेर तोरे पलंग सुख नींद
मोरे पलंग बाबू छूरी कटारी
सुन ले देवर नंदलाल
हमरे पलंग बाबू कारी नागिन रे
फेर डसि डसि जिवरा लेय
तुहरे पलंग भउजी कारी नागिन रे
फेर भइया ल कइसे बचाय
तुंहरे भइया बाबू बड़ नगमतिया,
फेरे अपन जिवरा ल लेथें बचाय।

— o —

(४४) पइयां में लागत हों
चंदा सुरुज के, रे सुअना
तिरिया जनम झनि देय
तिरिया जनम मोर गऊ के बरोबर। रे सुअना
जहं पठवई तहं जाय। रे सुअना

अंगठिन मोरि मोरि, घर लिपवावँ – रे सुअना
फेर ननद के मन नहिं आय
बाहं पकरि के सैंया घर लावे – – रे सुअना
ससुर हर सटका बताय ।
भाइ ला देहे रंगमहला दुमजला – रे सुअना
हमला तो दे हे बिदेस ।। रे सुअना

– ० –

(४५) कामे बोवाबो रामे रमकेलिया कामे बोवाबो गोंदा फूल ?
बखरी बोवाबो रामे रमकेलिया कुंआपार बोवाबो गोंदा फूल ।
कामे निदाबो रामे रमकेलिया कामे निदाबो गोंदा फूल ?
हंसिया निदाबो रामे रमकेलिया कुदारी निदाबो गोंदा फूल ।
कामे टोरबो रामे रमकेलिया कामे टोरबो गोंदा फूल ?
चरिहा टोरबो रामे रमकेलिया झपली मां टोरबो गोंदा फूल ।
कोन गली जाथे रामे रमकेलिया कोन गली जाथे गोंदा फूल ?
राजा गली जाथे रामे रमकेलिया नेगी गली जाथे गोंदा फूल ।
का काम आथे रामे रमकेलिया का काम आथे गोंदा फूल ?
साग रंधाथे रामे रामकेलिया हार गुंथाथे गोंदा फूल ।
कामे मिठाथे रामे रमकेलिया कामे चढ़ाथे गोंदा फूल ?
मही मां रंधाथे रामे रमकेलिया देवता मां चढथे गोंदा फूल ।

– ० –

(४६) कहवां रहिथे मोंगरी मछरी न रे सुआ हो कहंवा रहे दूधनाग?
जल बिच रहिथे मोंगरी मछरी न रे सुआ हो भोड़ू में रहे दूधनाग ।
का चारा चरथे मोंगरी मछरी न रे सुआ हो का चारा चरे दूधनाग?
सांवा कोदैइया मोंगरी मछरी ना रे सुआ हो दूध के पियैया दूधनाग ।

– ० –

(४७) कोन चिरइया मोर चीतर काबर रे सुवना,
कि कोन चिरइया उजर पाखं ?
सुआ मोर कोन चिरइया उजर पांख ?
भरहो चिरइया मोर चीतर काबर,
बकुला चिरइया उजर पांख रे ।
सुअना बकुला चिरइया उजर पांख ।
कोन चिरइया सुख सोवय निंदिया,
कोन चिरइया जागय रात ?
मोर सुअना कोन चिरइया जागय रात ?

म रही चिरइया सुख सोवय निंदिया,
जो सुअना बकुला जागय सारी रात।
मोर सुअना – –

– ० –

गौरा-गीत

(४८) एक पतरी रैनी झैनी
राय रतन दुर्गा देवी
तोर शीतल छांव माय
जागो गवरी जागो गवरा
जागो सहर के लोग
झांई झूंई फुले झरे सेजरी बिछाय
सुनव सुनव मोर ढोलिया बजनिया
सुनव सुनव मोर गांव के गौंटिया
सुनव सुनव सहर के लोग
जागो गवरी जागो गवरा।

– ० –

४९) जोहार जोहार मोर ठाकुर देवता
जोहार लागेंव तुम्हार
ठाकुर देवता के मड़ी लता छवावै
बुलेवा परेवा हंसा
तरी झूले हंसा परेवा
ऊपर झूले हनुमान
हंसा ला देबो हम मूंगा मोती
परेवा ला चना के दार
जोहार जोहार मोर ठाकुर देवता।

– ० –

(५०) बढ़ई केहेंव बढ़ई मोर भैया
हमर ईसर बे
हाथ न बने बहिनी गोड़ न बने
कइसे के मैं ईसर देंव
गांव के गौंटिया गजब अभिमानी, नइ दे चबूतरा मां डेरा
खोरिन खोरिन ईसर चले जाये नइ दे घर मां बसेरा
बढ़ई केहेंव बढ़ई मोर भैया हमर ईसर जाथे
जावथे तो जान दे बहिनी आगू बरिस फेर आही

– ० –

(५१) घिमिक घिमिक बाजा बाजे कहंवा के बाजा बाजे
राजा हो मोर ईसर देव, लेवत हे जनम
कहंवा के बाजा आए
कहंवा के ईसर मोर जती
जनामन कहवां लिए अवतार
के तोला कून्दे कुन्दरवा
के संच्चा ढारे हे सोनार
भिभोरा माटी बहिनी मोर जनामन
बढ़ई घर लेहेव अवतार

— ० —

(५२) पानी भीतर के मेचका मुंहन मुंहा लेथें
बरिख दिन के पावन में खेलबो डुबकैया
खेलबो डुबकैया ईसर खेलबो डुबकैया
बरिख दिन के पावन में खेलबो डुबकैया
नदिया भीतर के झिलमिल टेंगना
जाइ घरे जस मोतिन के अंचरा
छोड़ छोड़ टेंगना मोर अंचरा ला, मोर घर ननद बिराजे हे न
ननद ला देवो सुपली टुकनी खेलत खेलत दिन जैहे न
छोड़ छोड़ टेंगना मोर अंचरा ला, मोर घर देवर विराजे हे न
देवर ला देबो बांटी भौंरा खेलत खेलत दिन जैहे न
छोड छोड़ टेंगना मोर अंचरा ला मोर घर ससुर बिराजे हे न
ससुर ला देबो टंगिया वसुला छोलत छोलत दिन जैहे न।

— ० —

(५३) महादेव दुलरू बन आइस, घियरी गौरा हांसिन वो
मैना रानी रोए लागिन, भूत परतेवा नाचिन वो
कैसे पायेव माथ के चन्दा गंगा कैसे पाएव हो
तन में सांप लगाएव कैसे कावर भभूत रमाएव हो
गौरा बर हम जोगी जनगेन अंग भभूत रमाएन वो
नांदी बैला चढ़के बन बन अड़बड़ अलख जगाएन वो
आवर होंगे भांवर होगे खाएन बरा सोहारी वो
गौरा महादेव ईसर हमरे, हमर बाप महतारी वो

— ० —

(५४) अगरी अगरी नीमे अगरी जहां डंडैया ला बांधे
ओ घर ले निकरे बड़े डंडैया अंगना ला बटोरे
कइसे के मैं उठौं सास कोरबन बारो रोये
कोरबन बारो तैंहा नोनी लड़वा धरा दे
खाए बर तो खाहै सास मरिहै पियासे
करसा में हावै जूड़ पानी तौने ला पियादे
पिए बर तो पीहै सास मरिहै फेर वो जाड़े
झापी मां हावै झिलिंग पिछौरी तौने ला ओढ़ा दे।

— o —

माता–सेवा

(५५) मैया तोरे दरस बरस माता, आये हे जनक दुलारी हो माय।
सात सखी सिय संग में लेके गिरजा पूजन जाय हो माय ।।
राम लखन गुरु आयसु पाय, फुलवा देखन जाये।
एक सखी तेही मां से बोले, कुंवर कहां ले आये हो माय ।।
चाऊंर चन्दर बेल के पतिया, गिरिजा शीश चढ़ायें।
शीश पर नीम के डारा माता, खड्ग खप्पर लिये धारी हो माय ।।
जा जस गावौं ता जस बरणौं, केवल शरण तुम्हारी।
धूप दीप नैवेद्य आरती, देवहि अर्पण कीन्हें हो ।।
चौसठ योगनी गावत मंगल, सिया आरती उतारे।

— o —

(५६) माया माया मोंगरा गूंथ दे मालिन के खियरी फूल गजरा।
काके फूल गजरा, काहेन क हेन फूल हार।
काके फूल माथ मटुकिया, सोरहो सिंगार ।।
चम्पा फूल गजरा, चमेली फूल हार।
सेवती फूल के माथ मटुकिया सोरहो सिंगार ।।
कौने सोहे गजरा, कौने के सोहै हार।
कौने के सोहै माथ मटुकिया सोरहो सिंगार ।।
सेंदुरा सोहै गजरा, कालिका सोहै हार।
बूढ़ी माय के माथ मटुकिया, सोरहो सिंगार ।।

— o —

(५७) मैया सोरहों सिंगार करि, सुभग सिंहासन बैठी हो माय
चैत मास नौलख अमरइया, शीतल छइहां बैठे
बैसाख बाघपर बैठ भवानी घूंघर के छवि ऐसे
जेठ मास सुन्दर मन्दिर में खस के पंखा होवै।

भर असाढ़ जेजम पर बइठे सावन सखी झुलावैं ॥
भादों रिमझिम बरषा देखैं अतर सुगन्ध लगावैं
क्वार मास जगदम्ब भवानी बैठे जोत जलावैं
कातिक करि स्नान जालपा विप्रन दान देवावैं
अगहन आंगन गड़े हिंडोला सखियन मंगल गावैं
पूस मास अति जाड़ भवानी ओढ़े अम्बर चीर
माघ बसन्त पचमी मानैं झोली भरे अबीर ।
फागुन होरी खेलें मगन है सखियन संग सब लीन्हें
आदि भवानी तोर जस गावों, बरुआ के रक्षा कीन्हें ॥

— ० —

(५८) मैया भीख बगस दे जन ठाढ़े तोरे द्वारे हो माय ।
घर घर मं पलंग तुम्हारे माता, घर घर पग तुम धारे ॥
मन मोर हुलसे कमल दल विहंसे, पायो दरस तुम्हारे ।
कौन बरन माया दरस तुम्हारे, कौन बरन छबि बरनों ॥
कौन हेत माय बरुआ पाले, कौन हेत जस तोरे ।
सेंदुर बरन माय दरस तुम्हारे, मोतिया बरन छबि बरनों ॥
बाल हेत माय बरुआ पाल, भक्त हेत जस तोरे ।
सब सेवक मिलि अर्ज करत हैं, विनय सुनों मोरी माता ॥
बालक कष्ट निवारो जननी, सेवक के सुख दाता ।

— ० —

(५९) कइसे के दरसन होय हो मैया संकरी दुअरिया ।
संकरो दुअरिया हो मैया झंझरिया किवड़िया ॥
मैया दुआरे हरियर पीपर लाली ध्वजा फहराई ।
मैया दुआरे कोढ़िया पुकारे देव काया घर जाई ॥
मैया दुआरे आंधर पुकारे देव नयन घर जाई ।
मैया दुआरे बांझ पुकारे देव बालक घर जाई ॥
मैया दुआरे निर्धन पुकारे देव माया घर जाई ।
मैया दुआरे लंगड़ा पुकारे देव गोड़ घर जाई ॥
आंधर ला आंख दीन्हें कोढ़िया ला काया ।
लंगड़ा ला गोड़ दीन्हें निर्धन ला माया ॥
बांझन पुत्र खिलाये हो मैया संकरी दुअरिया ।

— ० —

जंवारा-गीत

(६०) संवागा ले आरती हो माय, संवागा ले आरती हो माय
हिंगलाज के तीत पतंग जहां भवानी तोर उत्पन्न
आसन मार सिंगासन बइठे, लिम्बू लाट सदा फल लटके
आइ सुइ कुंज निवारी, तोला लुटे नरियर के बारी
झोफा झोफा फरे सुपारी, संवागा ले ले आरती हो माय
ब्रम्हा पूजे महादेव पूजे करे महादेव सेवा माय
चक्र चलावत अर्जुन आये, सब देवता के सरदारे हो माय
संवागा ले ले आरती हो माय
अपन मा जेठे धनही कोदाई, धन मां जेठे लछमी हो माय
तिरिया मां जेठे सिता जानकी जग मा जलापा माये हो माय
संवागा ले ले आरती हो माय

— ० —

(६१) कोन राजा बसय मोर दिल्ली सहर मां
कौन राजा बसय सोनपूर हो माय
कोन राजा बसय मोर ब्रम्हपुरी मां
कोन राजा बसय कैलासे हो माय
राजा अकबर बसय दिल्ली सहर मां
जयसिंग बसय सोनपूर हो माय
ब्रम्हा ओता बसय मैया ब्रम्हपुरी मां
संकर बसय कैलासे हो माय
चारों देवता मिल एक मत होयके
चलथें माता के दरबारे
कामा तो चढ़य, माता राजा अकबर
कामा तो चढ़य, जयसिंग हो माय
कामा तो चढ़य, माता ब्रम्हा ओ देवता
कामा तो चढ़य, सिव संकर हो माय
हाथी मां चढ़य, मैया राजा अकबर हो
घोड़ा मां चढ़य जयसिंग हो माय
छोट मोट पालकी मां ब्रम्हा ओ तो चढ़गे
बइला मां चढ़य सिव संभू हो माय
पहिले पियान करे हे चारो देवता
लिमतरी परे हे मेलान
दुसर पियान करे हे चारो देवता

पट पर में परे हे द्वारे हो माय
कवने दिन खाए गुड़ अउ चिवरा
कवने दिन साधन उपासे हो माय
आठ दिन नव रात के रेंगन
गढ़ हिंगलाज नियराये हो माय
झुंझुर-झांझर ओ तो रखवा झोंकत
सागर के धरे हो माय
लाली गुलाली बैरग उड़य माय मोर
धरम ध्वजा फहराये हो माय
खिरकी ऊपर ले देखय रानी दुरगा
कवने कारन चले आवे हो माय
कवने कारन चारों देवता मन आयें
कवने पड़े हे तू मन ला कामे हो माय
तोर दरस बर आये बुढ़ी माय मोर
चरन पड़े के हमला कामे हो माय

— ० —

(६२) फूल चढ़ावौं हो मोरे सालिक रामा हो बीर हनुमान
कवने रंग तुलसी कवने रंग रामा
कवने रंग हो मोरे बीर हनुमान
हरा रंग तुलसी सावल रंग रामा
लाल रंग हो मोरे बीर हनुमान
कहां रहिथे तुलसी कहंवा रहिथे रामा
कहंवा रहिथे मोर बीर हनुमान
चौंरा रहिथे तुलसी सिंघासन रहिथे राम
मंदिर रहिये मोर बीर हनुमान
का खाथे तुलसी का खाथे रामा
का खाथे मोर बीर हनुमान
पानी खाथे तुलसी मिठाई खाथे रामा
बरफी खाथे मोर बीर हनुमान

— ० —

(६३) कहां रहिथे नरसिंग कहां रहिथे जलसिंगा
कहां रहिथे मोर भंइसासूर, कहां ठाकुर देवता हो
नार मा रहिथे नरसिंग, जल मां रहिथे जलसिंगा
डबरा मां रहिथे मोर भंइसासूर, अहो पीपर मां रहिथे मोर ठाकुर
देवता हो

का पूजा लेथे नरसिंग, का पूजा लेथे जलसिंगा,
का पूजा लेथे भंइसासूर, अहो का पूजा लेथे मोर ठाकुर देवता हो
चितरा कुकरा नरसिंग, नरियर लेथे जलसिंगा,
सूरा लेथे भंइसासूर, अहो पंड़रा बोकरा लेथे ठाकुर देवता हो

— ० —

(६४) मसान हुई हो काखर पुत हे हो
काखर पुत हे लाल बरम देव काखर पुत गोरैया
काखर पुत हे बन के रक्सा, काखर पुत हे हो
बाम्हन पुत हे लाल बरमदेव, गहिरा पुत गोरैया
धोबिया पुत हे वन के रक्सा, धोबिया पुत हे हो
काले थे मोर लाल बरमदेव, का लेथे गोरैया
का लेथे मोर बन के रक्सा, ला लेथे हो।
नरियर लेथे लाल बरमदेव बोकरा लेथे गोरैया
कुकरी लेथे बन के रक्सा, कुकरी लेथे हो।
कहां बसे मोर लाल बरम देव कहां बसे गोरैया
कहां बसे मोर बन के रक्सा कहां बसथे हो।
पीपर बसे मोर लाल बरमदेव खोड़रा बसे गोरैया
बन मा बसथे बन क रक्सा, बन के रक्सा हो।

— ० —

भोजली-गीत

(६५) अहो देवी गंगा,
देवी गंगा देवी गंगा, लहर तुरंगा
हमर भोजली दाई के भीजे आठो अंगा
आइ गइस पूरा बोहाइ गइस कचरा
हमर भोजली दाई के सोने सोन के अंधरा
आइ गइस पूरा बोहाई गइस मलगी
हमर भोजली दाई बर सोने सोन के कलगी
कूटि डारेन धान पछोरि डारेन भूसा
लइके लइका हवन भोजली झन होहू गुस्सा
सोने के कलसा गंगाजल पानी
हमर भोजली दाई के पैंया पखारी
सोने के दिया कपूर के बाती
हमर भोजली दाई के आरती उतारी
पानी बिन मछरी पवन बिन धान

सेवा बिन भोजली के तरसे पराम
माड़ी ले जोंधरी पुरुष कुसियार
जल्दी जल्दी बाढ़ो भोजली होवो हुसियार
भंइसे के रेंगई
धरस परि जइहे
भोजली के रेंगना मां
नरबदा वोहि जइहे
भखरा मां आंखर चाउर
गहुला मां दूध
खड़े हे कौसिल्ला रानी
मांगये पूत
दूध मांगेन पूत मांगेन
अउ मांगेन आसीस
जुग जुग जियब भोजली
लाख बरीस ।

— • —

(६६) धिमिक धिमिक बाजा बाजये
कंहवा के बाजा बाजे
तेली कलारिन भोजली उझायेहे
तिहां के बाजा बाजे रोहिला ओ
झिमिक झिमिक दिया बरये
कहां के दिया बरे ओ
तेली कलारिन भोजली उझोयेहे
जिहां के दिया बरे ओ
मरय रे चण्डालीन मरय रे असतीन
बिसरे दुख ला समझाये
पाटे में रहितिस हिरसिंग बिरसिंग
तोरो लहरे ला पुरोतिस
कका ओ बड़ा मोर लेखे गड़ा
कोने तोर लहरी पुरोये
माड़ी भर जावे गंगाजल पानी
किया तैं दान देवे भइया
किया पहिनवे चुरा पहरी
किया बसावे दसो गांव
चुरा ओ पहरी टूट–फूट जइही

उजरी पुजरी जइहय दसो गांव
जियत भर ले लानबे लेगबे
जियत भर ले पसिया देबे ।

— ० —

धनकुल-गीत

(६७) देबी बोल्यों मोर धरती पिरथी
ओ देबी बोल्यों मोर धरती पिरथी
जागर न्योता मां आवो
देबी बोल्यों मोर किल्ला वाली
ओ देबी बोल्यों मोर किल्ला वाली
जागर न्योता मां आवो
परभू मोर जागर न्योता मां आओ
देबी बोल्यों मोर सितला माता
ओ देबी बोल्यों मोर सितला माता
जागर न्योता में आवो
दाई मोर जागर न्योता में आवो
काकर घर मोर जागर न्योता, काकर घर मोर जागर न्योता
काकर घर के बलाव
दाई मोर काकर घर के बलाव
धनकुल घर के मोर जागर न्योता
धनकुल घर के मोर जागर न्योता
देबी घर के बलाव
परभू मोर देबी घर के बलाव

— ० —

नागपंचमी के गीत

(६८) गुरु के आवत मय धन सुन पइतेंव
लट छोरि अंगना बहरितेंव
मूड़ काट गुरु बइठक देतेंव
गोड़ धोए बर पानी— —
भरि भरि हुक्का गुरु ला देतेंव — —
फर करबं मेहमानी — —

— ० —

(६९) सुरहिन गइया के गोबर मंगाले
खूंटधर अंगना लिपाले

ओगरी धान के पिसान पिसाले
गज मोतिन के चौक पुराले
सोने के कलस मढ़ाले
सात भांवर के बाती
हाय हाय मोर नागिन
कलस मां दिया जलाये ओ
सात बेदन कर खाड़ा ओ
चउक मां देवथे मढ़ाय
कहां रहिस तोर अनमन जनमन
कहंवा लिये अवतार
करिया भिभोरा मोर अनमन जनमन
छुरियन दह अवतार
कहां ओ नागिन तोर जाती जनमन
कहां लिये अवतार
पहार परबत मोर जाती जनमन
डीलवा मां लिहेंव अवतार
बाजाहर बाजय ओ नागिन
बाजाहर बाजय –
बाजा के सबद मां
बीर नाग नाचय ––

–०–

(७०) डिलया ले विष उमड़ चले
विष मरिहा हो नाग
विष मरिहा हो नाग –
पिढ़ुली मां परे हे भेलान
राउत रइया रे भादों हिलोर
कंप लगा दे रे बघबा मोर
बेंदी विष मूड़ चढ़ा मोर
पिढ़ुली ले विष उमड़ चले
विष मरिहा हो नाग
अंगना मां परे हे भेलान।

–०–

करमा-गीत

(७१) चोला रोवत हे राम बिन देखे परान
दादर झांवर झाड़. ढूंढौं डोंगर बीच मंझाय।
सबै पतेरन तोला ढूंढौं कहां लुके हे जाय॥
चोला रोवत हे राम बिन देखे परान
माया ला तैं कस के टोरे, सुरता मोर भुलाई।
मोर मड़इया सूनी करके कहां करे पहुंनाई॥
चोला रोवत हे राम बिन देखे परान
इन नैना मां नींद न आये हिरदा होइगे सूना।
डोंगरी उहरी तोला ढूंढौं बिपदा बढ़गै दूना॥
चोला रोवत हे राम बिन देखे परान।

— o —

(७२) करिया सियाही कागद लिखना गा
तलफगे चोला कब मिलना रे।
न कछू बोले न कछू बताय हो हाय
कइसे मां दुबधा समाय, तलफगे — —
न कछू बोले क कछू बताय, हा हाय।
कैनपटी दिन आये कैनपटी चंदा हो हाय
कैनपटी तारा समाय, तलफगे,
न कछू बोलें न कछू बताय हो हाय
घर भीतर आग लगे धुंवा नहीं आवे हाय
कइसे मां आंसू बहाय, तलफगे
न कछू बोले न कछू बताय, हो हाय।
लौकी के बेला करेला के पाती हो हाय
ढाका बिना कुम्हलाय, तलफगे — —
न कछू बोले न कछू बताय हो हाय
दिया के बाती ओ चन्दा के जोती हो हाय
रात भये जल जाय तलफगे — —
न कछू बोले न कछू बताय, हो हाय

— o —

(७३) ले जावे कोइली कछार, जोड़ी मोला ले जावे रे।
ले जा हूं कोइली कछार, जोड़ी तोला ले जाहूं रे

झिरिया के पानी छलक बहना रे,
रोइहूं चोला हमार।
झांवर के रेरा कठिन चलनारे,
कइसे के पाहूं किनार ॥
डोंगर दिवारी में जरथे पतेरा,
सब बन होगे उजार।
डोंगर के डहरी कठिन भुलनी रे
कोन कोती करबो गुहार।
ले जाबे कोइली कछार।।

— • —

(७४) जियत जनम लेबे हंसि लेबे खेलि लेबे,
फेर ये दुरलभ संसार।
के दिन जीबो राम जिनगी के नइये भरोसा
जिनगी के नइये भरोसा ये जां ला लेके कहां भागे —
मोर जम के आगू,
ए छान्ही ओ छान्ही कूदय बिलैया
हम परदेसी दुरिहा के रहइया,
लकर धकर आवत हो ही मोर अलबेला।
कोन जाने बलम ला भेटहूं कि नहीं —
कोरे गांथे मांग संवारे दरपन मां छइहां देखे
कोन जाने बलम संग भेटहूं कि नहीं।

— • —

(७५) ओ दीदी मोर पिया गे परदेस
न कोन्हो आवे न कोन्हो जावे न भेजे संदेस
ओ दीदी मोर पिया गे परदेस
काकर बर में ह मेंहदी रचावों
काकर बर संवारों केस।
पिया बसे दूर देस — —
ओ दीदी मोर पिया गे परदेस ॥
नि तो भावे ओकर बिन मोला सास ससुर के देस।
ओ दीदी मोर पिया गे परदेस ॥

— • —

(७६) भज ले रे अभिमान
सिरि सीताराम ल सुमर भज
अगि बोये सोना जागे नहिं
मोती फरै न डार।
सिरि सिताराम ल सुमर भज
गए समय बहुरे न आही
खोजे मिलय न उधार॥
बिना पंख के सुअना
उड़ चलिस अकास।
रंग रूप ओकर नइये
नइये भूख पियास॥
सिरी सिताराम ला सुमर ले
बीच बन मां लकड़ी नइये
नइये छाया रे नीर।
डेरा परे हे कुवंर मां
कइसें छोड़ंव रघुवीर॥
सुक्खा नदिया अगम बहे
बिन बलनी के धार
सेमरा के पेड़ सुहावनी
डेरा परे रघुवीर
गाड़ी जी अटके हे रेत मां
बैला अटके हे नाव बिना
कइसे उतरंव में पार।
सिरी सीताराम ल सुमर ले

— o —

(७७) में न जियों बिन राम ओ माता
में न जियों बिन राम
राम लखन सिय बन पठवाये
नाहिं किये भल काम
भल होत मोर हमुहो बन जइहैं
अवध रहुहैं केहि काम।
राम बिना मोर गद्दी हे सूना
लखन बिना ठकुराई।
सिया बिना मोर मंदिर सूना
कोन करे चतुराई॥

कपटी कुटिल कुबुद्धि अभागी
कोन हरे तोर ज्ञान ।
भल सुर नर मुनि सब दोस देवत हैं
नाहिं किये भल काम ओ माता
में न जियों बिन राम ।

— ० —

(७८) एक गोड़ खोरी हवे
आंखी तोर कानी रे ।
तब ले लाहोच ले थे
जरे तोर जवानी रे ॥
देखो संगी ये दुनिया के बड़ाई ला ।
ढेकी ढोका अउ कनवा के लड़ाई ला
कानी आंख मा काजल ला आंजत हे
दतली दांत मां मिस्सी ला लगाये हे
बजार जाय बर झगरा मचाये हे
टिकली कुहकूं नगबेसर लगाये हे
माथे के टिकलो तोर चंदा अस चमकत हे
ओली के मुर्रा ला मुसुर मुसुर धमकत हे
एक गोड़ खोरी हवे — — —

— ० —

डंडा-गीत

(७९) जुरि जइहौ ललना बिलम जइहौ ना, फागुन बांचे हे दिन चार
अइल पार मइके पइल पार ससुरे, मोला नंहका दे भैया पार ॥
नदिया नहकोनी गोरी का बनो देबे, कहि दौ सोच बिचार ।
गोड़ चुटकिया हाथ मुंदरिया कान के दे देहों ढार ।
का करिहों तोर गोड़ चुटकिया का करिहों तोर हाथ मुंदरिया ।
घरनी ला देबे मोर गोड़ चुटकिया पहिरा देबे हाथ मुंदरिया ॥
न मोर घर गोरी न मोर घरनी न मोर हावै संसार ।
बहिनी नांही तेहों बिलम जा नदिया के बाढ़िस करार ॥
दिन के कैसन भोजन जेवइबे, ओढ़े बर का देबे रात ।
भाई जान बिलम जातेंव फेर मोर पिया के घात अघात ॥
दिन के खवाहों खड़ा मसुरिया, रात ओढ़ाहों भंवर जाल ।
आगी लगावों तोर खड़ा मसुरिया, ना ओढ़ों तोर भंवर जाल ॥

— ० —

(८०) तोर बिन मोर चोला तरसथे जोड़ी मोर
कइसे के काटौं दिन रात रे भाई।
भादो के महीना उठे हे बादर करिया,
रहि रहि के पानी बरसथे गा भाई
तैं हर रहिते जोड़ी तो बोते धान,
मन ला मिलाके होगे बेइमान रे भाई
काखर करा दुख में गोठियावौं,
रट रट पानी बरसथे रे भाई।
बिच बरेंडी बइठे कौआ बोले,
कौआ के बोली सुन मन डोले रे भाई।
रांधे हंव लेड़गा कोचई मोर जोड़ी
डेरी आंखी मोर फरकथे रे भाई।
सुन्दर नारी पुरुष बिन तरसंव
काबर बारा हाल करथे रे भाई।

— ० —

नाच-गीत

(८१) कौने गुना मं पति तियागे बैगा हो
कौने गुना मं पति तियागे।
मांघे नहाथौं सुरुज पइयां परथौं
चन्दा अरध में देथौं गा
पूजा बिरत में करथौं
माला ला जपथौं
बद डारेंव माई का मलुक बोकरा गा।
रात रात जाग के जोहत हौं रहा
बिसर डारेंव अपन सुध्र ला गा
तोर पइयां लागौं तोर बिनती करौं
मोला बता पिया कब आही गा
मांघे के मेला पुन्नी नहाये ल जा
पिया ला अपन तैं पावे नोनी वो
पिया ला अपन तैं पावें
काला पहिर के मैं पुन्नी नहावौं
काला पहिर घर आहूंगा।
धोतिया पहिर के पुन्नी नहाबे
पोतिया पहिर घर आवे वो नोनी
अपन पिया ला पावे ओ।

— ० —

(८२) नइ पायेंव राम तोरे चरन के गति ला
तोरे चरन गंगा जल बहिगे
भागीरथी बिलमाये महराज।
कोदई बपुरी जनम के बुटरी
मुसर परे छरियाई महाराज ॥ तोरे ०
खेड़हा बपुरा जनम के टड़गा
मही परे अटियाई महराज।

— ० —

(८३) गाय ले ले भइया तैं भइंस लेले गा।
ते कहां जात्रे भइया ते कायर जावेगा।
जाथस तो जावे भइया बइठ ले ले गा॥
इछलगे बिछलगे, राहेर फूल गे
करियाला देखिके नजर झूल गे
करिया के डौकी अटल कारी।
भोला भरमे भरम मां देवथे गारी।
पायेल खड़ौवा जोहे ल लागेंव,
माला किरिया कराले माखुरबारी।
अठन्नी चरन्नी संदुक भीतरी।
आनी बानी के डौकी शहर भीतरी।

— ० —

(८४) चिया ला लेगे बिलैया, चियाला लेगे।
ये दे बिलैया सखाराम, चिया ला लेगे॥
अरे लसुन करे तो चुनन चानन अउ हरदी रंग बदलैय"।
मिरचा दुखाही बड़े परचंडा, सबो के जी ला जलैया॥
सखाराम चिया ला लेगे बिलैया॥

— ० —

ददरिया

(८५) कया के पेड़ मां कया नइए।
निरदई तोर शरीर मां दया नइए॥

(८६) हंड़िया के मारे तेलई फुट जाय।
चारी चुगली के मारे पिरित छुट जाय॥

(८७) तवा के रोटी तवा मं जरि जाय।
दुजहा ला झन देवें कुंआरी रहि जाय॥

(८८) पीपर के पाता हलर हइया ।
दुई डौकी के डौका कलर कइया ।

(८९) तोर मन चलती मोर मन उदास ।
जल देवता मां खड़े होके मरथंव पियास ।।

(९०) फूटहा रे मंदीर कलस तो नइए ।
दू दिन के अवइया दरस तो नइए ।।

(९१) मोर जरत करेजा कसकत तन मां ।
चुर चुर के हवंव राजा अपन मन मां ।।

(९२) गोरी के अचरा भुइयां मां लुरे ।
गांधी जी के झंडा दुनिया मां फिरे ।।

(९३) नवा घर मां गड़ाये थुनिहा ।
नेहरू बाबा के कहे मां चलथे दुनिया ।।

(९४) धनिया पुदीना मिरचा सोंठ ।
आगू पाछू ला नइ सोचयं डारत हैं वोट ।।

(९५) नवा रे कैंची धरायेला सान ।
सीता माई के मुंदरी ला रावन मांगे दान।।

(९६) चंदा तोर दाई सुरुज तोर बाप ।
गढ़ लंका तोर मइके दुरुग ससुरार ।।

(९७) रस्ता ला रेंगे खोर ला डंहके ।
गोरी खोंचे करौंदा गली मां मंहके ।।

(९८) चन्दा ऊवे, चंदैनी छिटके ।
तोर कन्हिया ले चूंदी नागिन लटके ।।

— ० —

बांस-गीत

(९९) छेरी ल बेचौं मेढ़ा ल बेचौं,
बेचौं भैंसी बगार ।
बनी भूती मां हम जी जावो
सोवोन गोड़ लमाय ।।

छेरी न बेचौं, मेढ़ी न बेचौं
न बेचौं भैंसी बगार ।
मोले मही मां हम जी जावो,
अउ बेचौं तोहू ल घलाय ।।

कोन तोरे करही रामे रसोई,
कोन करे जेवनार।
कोन तोरे करही पलंग बिछौना,
कोन जोहे तोरे बाट ॥
दाई करिहै रामे रसोई,
बहिनी करे जेवनार।
सुलखी चेरिया पलंग बिछाही,
अउ मुरली जोहे मोर बाट ॥
सास डोकरिया मरहर जाही
ननद पठोहूं ससुरार।
सुलखी चेरिया हाटन बिकाही,
अउ मुरली नदी मां बोहाय ॥
दाई ल रखहूं अमर खवा के,
बहिनी रखहूं छै मास।
सुलखी चेरिया बांधिछांदि रखहूं
अउ मुरली ल रखहूं जी मां डार ॥

—०—

देवार-गीत

(१००) मारदिस पानी बिछलगे बाट
ठमकत केंवटिन चलिस बजार
केंवटिन गिरगे माड़ी के भार
केवट उठाये नगड़ेंडा के भार
लाई मुर्रा दीन बिछाय
शहर के लइका बिन बिन खाय
अपन लइका ला थपड़ा बजाय
पर के लइका ला कोरा मां बइठाय
दिन खवाय मछरी भात
रात ओढ़ाइस मछरी के जाल
अलको रे केंवटिन भलको रे धार
बुध सनीचर मंगलवार
भरे पूरा मां घोड़ा दौड़ाय
सुक्खा नदिया मां डोंगा चलाय
रात के केंवटिन डफड़ा बजाय
दिन के केंवटिन खपड़ा बजाय

एक ठन सीथा मां फुल के मरे
एक बूंद पानी मां बुड़ के मरे
कारी केंवटिन गर भर पोत
बरगे केंवटिन सुरुज के जोत
कोलवा केंवट के डौकी आय
नाथू केंवट के बहिनी आय
फगुवा केंवट के काकी आय
रूपवा केंवट के दाई आय
मन्टोरा केंवटिन के सौत आय
गीत गवैया के सारी आय
कानी आंख मां काजर लगाय
खोरी गोड़ मां तोड़ा लगाय
बूची कान मां ढार लगाय
नकटी नाक मां गुना लगाय
"कहिदे केवटिन मछरी के मोल"
नइए राजा मछरी के मोल
जतके पाजा ओतके लेजा
घोड़ा हाथी लाद के लेजा
सोनहर मछरी सोनार के मोल
बामी मछरी बाम्हन के मोल
उचटन डेंवा राउत के मोल
बिजलुवा मछरी बिजलुवा के मोल
डंडवा मछरी डंडवा के मोल
पढ़िन मछरी कसेर के मोल
कोतरी मछरी तेली के मोल
रुदवा मछरी कलार के मोल
सरांगी मछरी सरांगी के मोल
ओड़र कीरा ओड़िया के मोल
केंवई मछरी केवट के मोल
चिंगरी मछरी गड़रिया के मोल ।

— ० —

पंडवानी

(१०१) कूकुर लहंगी गांव सलंगनी, हाथी हदबद गदहा गदबद।
घोड़ा सरपट पैदल रटपट, सैंना करिस पयान,
भैया कुरूछेत्र मैदान।
कांपे लागिस बैरी के दल, कौरूदल मां मचगे खलभल
छाड़े अरजुन सर सर बान, कइसे बांचे प्रान,
भैया रथला हांकत हे भगवान।
कुरूछेत्र मैदान॥

— ० —

भजन

(१०२) तन के नइये भरोसा नइ बांचै चोला
खटिया कहिथे सुन गोसैंया सब दिन सोथौ मोला।
एक दिन जब बेरा आही उल्टा लेगौं तोला॥ तन के० — —
कपड़ा कहिथे सुन गोसैंया रोज पहरथो मोला।
एक दिन जब बेरा आही उल्टा लेगौ तोला॥ तन के० — —
लकड़ी कहिथे सुन गोसैंया रोज जलाथौ मोला
एक दिन जब बेरा आही मैं तो लेसौं तोला॥ तन के० — —
साबर कहिथे सुन गोसैंया रोज खनथौ मोला।
एक दिन जब बेरा आही मैं गड़ियाहूं तोला॥ तन के० — —

— ० —

(१०३) नहि जाए नहि जाए नहि जाए गा,
नहि जाए मोर भैया तीनों पन गा बरोबर नहि जाएगा।
बालक रेहे बलकइयां कहाये, पलना हा गजब सुहाये।
माता पिता के गोद बइठके, दूध पियत मुसकाये गा॥
आये जवानी अलमस्त कहाये गलिया हा गजब सुहाये।
घर के तिरिया ल बइरी बनाके बाहिर से मुसकाये गा॥
आये बुढ़ापा सिर डगमग डोले राजा, सटका हा गजब सुहाये।
बेटा बहू ला करू बताके माटी मां मिल जाये गा॥

— ० —

(१०४) तोला कइसे बताओं मन के बात जोड़ी
तिरिथ जाय के मोला सौंख लागे।
मोर सौंख हे तिरिथ जाय के दू दिन के जिन्दगानी।
मैं हा कहिथंव सुन मोर लेड़गी सुन ले मोर कहानी।

घर घर मां भगवान हा बइठे कितन के राधारानी ।
सरी मंझनिया कूटत रहिथस ते अंगना मां धान ।
कभू मंगैया बन के तोर घर आ जाही भगवान ।
झन कोनो ला टेड़गा बोलबे, देबे पसिया पानी ।
बड़े बिहिनिया हेरत रहिथस तैं हा कुंआ ले पानी ।
धरम करम ल तैं नइ जानस काम करस मन मानी ।
मोर अकल मां ते चलबे तो नइ होवय तोर हानी ।

— ० —

(१०५) हरि जी के माला रे भाई,
दाऊ मोर हरि जी के माला रे भाई — —
साधू के गर मां ।
काहेन के तोर डंड कमंडल ?
काहेन के मृग छाला ?
काहेन के तोर बैन बांसुरी ?
काहेन के जय माला ?
साधू के गर मां ।
सोनेन के तोर डंड—कमंडल
मिरगा के मृग छाला ।
भल बांस के तोर बैन – बांसुरी
तुलसी के जय माला ।।
साधू के गर मां ।।
कोन धरे तोर डंड कमंडल ?
कोन धरे मृग छाला ?
कोन धरे तोर बैन बांसुरी ?
कोन धरे जय माला ?
राम धरे तोर डंड कमंडल ?
लखन धरे मृग छाला ।
सीता धरे तोर बैन बांसुरी,
तुलसी के जय माला ।।
साधू के गर मां ।

— ० —

कबीर पंथियों के पद

(१०६) आज घर आये साहब मोर
हुलसि हुलसि घर अंगना बुहारे
मोतियन चौक पुराई।
चरन धोय चरनामृत लीन्हा
सिंहासन बैठाई।
पांच सखी मिलि मंगल गावैं,
शब्द सुरति समाई।
बांधोगढ़ के आमिन बिनवै,
धनि हो कबीर गोसांई।

—०—

(१०७) मोहि अचरज लागे हो — —
एक अचम्भा ऐसे देख्यौं, कुंआ मां लगगे आग।
लद्दी चिखला जर बरगे, मछरी खेलैं फाग।
एक अचम्भा ऐसे देख्यौं, बिल्लो नो हे गाय।
दूध दही संग भेंट नइये, घीव बनारस जाय।

—०—

सतनामियों के पद

(१०८) चलहंसा अमर लोक जाबो,
इहां हमर संगी कोनो नइये।
एक संगी हावय घर के तिरिया,
देखे मां हियरा जुड़ाथे।
वोहू तिरिया हवय बनत भर के,
मरे मां दूसरे बनाथे।
एक संगी हवय कोखे के बेटवा,
देखे मां आसा बंधा थे।
वोहू बेटा हवय बनत भर के,
बहू आये ला बहुराथे।
एक संगी हवय धन अउ लछमी,
देखे मां चोला लोभाथे।
धन अउ लछमी बनत भर के,
मरे मां ओहू तिरियाथे।
एक संगी परभु सतनाम हे,
पापी मन ला मनाथे।
जियत मरत के सबो दिन संगी,
ओही सरग अमराथे॥

—०—

(१०९) खेलथे दिनवां चारी मइहर मां,
खेलथे दिनवां चारी,
पहिली लेवइया तीन झन आवें,
नाऊ बांभन बारी।
सइयां मोर अरजी करि देही,
आसो के लगिन टारी ॥
दुसर लेवइया सइयां आगे,
संग चार कहारी,
पकर बहियां डोला मां बैठारे,
कोनों नइ दउरय गोहारी ॥
बाहिर ला हंसा मांच सवारे,
भीतर भइन तियारी।
मिलना हो तो मिल लव हंसा
इहा ला हो जाथे तियारी ॥
सतनाम के दास ए कहिथे,
पद हे गियान के धारी,
ए पद के कोनो खोज जो करही
तेकरेच बुध हे भारी।

— ० —

पंथी-गीत

(११०) तन्ना नन्ना नन्ना नन्ना वारे नन्ना।
एक पेड़ अंवरा दूसर पेड़ धंवरा ॥
नाम लेके आए साहब नाम लेके आए।
माला मुंगवा छूटिस कंठी पहिनाए ॥
अधरे के नागर अधरे जुवाड़ी अधरे मां धोतिया सुखाए।
अइसन करनी कर नाम ला कमाए।
नाम के डंका ला गिरौद मां बजाए।
गिरौद ला छांड़ि के भंडार पुरी आए।
जहां तैं हा नाम के धजा ला फहराए।
मरे मरे मुरदा ला तैं हा जिआए।
सांप चाबे चाबे ला अमरित मां जिआए।
अइसन अइसन करनी ला दुनिया हा देखिस।
तभे सबे दुनिया सरन मा आइस।
जाके देखे कोनो तेलासी नगर मां
जहां तोर नाम के दियना बरत है।

— ० —

(१११) दिन कर आठे साहब बुध कर भादो आय।
निस अंधियारी अउ भादो के तो महीना।
जोने दिन किसन हा जनम धरे ललना।
चारोंन खुंट घमघोरा तो बरसगे।
चोकी वाले ल नींद आगे हो गुसंइया।
हाथ-हथकड़ी साहेब पांव कर बेली आय।
राजा वसुदेव के कटगे हो ललना।
रूप के गुंडरिया सोन के दौरिया मां
किसन कन्हैया ला धरे बारे ललना।
इही पार गोकुला के उही पार मथुरा के।
बीच मां वोहाथे नदी जमुना गुसंइया।
छपक-छपक राजा वसुदेव हा चलत हे।
चरन छुवे बर गंगा-जमुना उम्हत हे।
उबुक चुबुक राजा वसुदेव होवथे।
ये ही गति ला मोर किसन कन्हैया हा।
मन मां गुनथे गा दिल मां विचारथे।
खेलत कूदत में हा बीस बार अइहौं।
चरनों के दरसन कर लेबे देवना।
तभो गंगा जमुना हा नइ माने देवता।
चरन छुवे बर ओहा उम्हे बाढ़े ललना।
तब छिनी अंगरी के चरण छुवाए ले
घुटुवा बरोबर गंगा-जमुना हा होइगे।
मथुरा ले गोकुला पहुंचे बारे ललना।
नन्द नन्द हुत ला करावे बारे ललना।
नन्द तो बबा हा मन मां गुन थे।
कोन बैरी दुसमन रात के आऐ हे।
नांव ला बतइदे बैरी नाव ल बतइदे।
नोहों बैरी दुसमन, नोहों बैरी दुसमन।
पाठ ले साढ़ू में हा राजा वसुदेव आँव।
बिजली ला लेके राजा वसुदेव आवत हे।
आधी रात के अमल मां बारे देवता।
टेहों टेहों बिजली हा रोवे बारे देवता।
तब राजा कंस ला खबर मिले देवता।
दौड़त-दौड़त वो हा आवे बारे ललना।
पुत्तर भए हे के पुत्तरी रे बैरी मोर

राजा वसुदेव हा चरन मां गिरथे ।
गिरे गिरे वो हा दंडवत करथे ।
सुनिलेबे राजा सुनि लेबे बात ला ।
पुत्तरी जनम मोर लिए हे गुसंइया ।
एक निसानी मोर छोड़ देबे देवता ।
नारद मुनि हा ओतके बेर पहुंचे ।
तब राजा कंस के मति ला भरमाथे ।
सुन सुन बैरी बचने ला मोर रे ।
पुत्तरी होवे चाहे पुत्तर तो होवे ।
दूनों हा बैरी तोर आय रे गुसंइया ।
मति ला भरमा के मुनि नारद हा चलिदिस ।
पापी के मति हा भरम भए देवता ।
धरि के बिजली ला पटकय देवता ।
उड़िगे बिजली हा आसमान मां हो ।
बोली अस बोलत हवै बिजली तो रानी हर ।
तोर काल गोकुला मां पग धारे देवता ।

—•—





"विश्वभारती प्रकाशन नागपूर"

छत्तीसगढ़ी लोकगीत

डा. हनुमंत नायडू



अनिल बी. ढेंगले